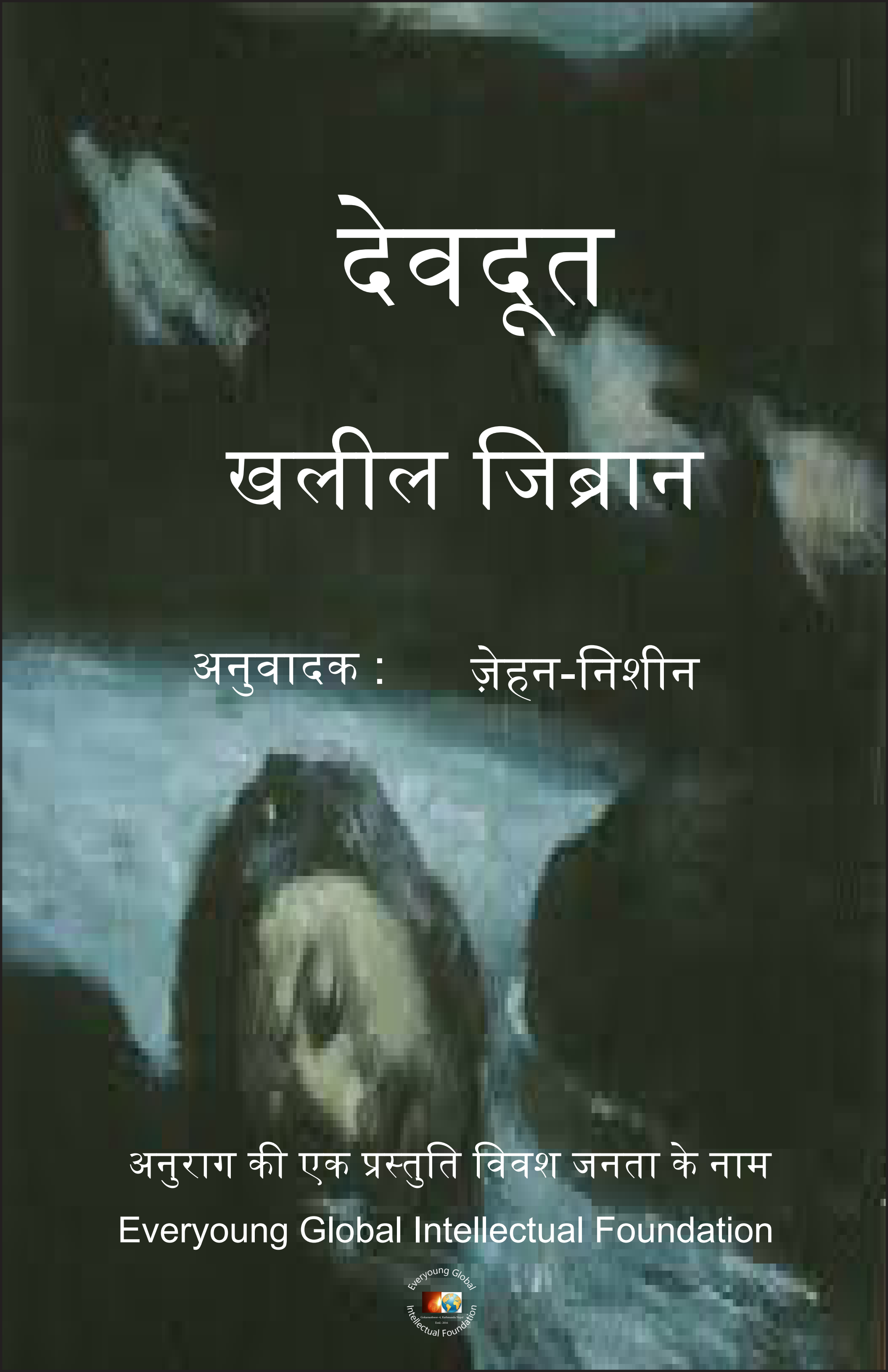

देवदूत

खलील जिब्रान

अनुवादक : ज़ेहन-निशीन

अनुराग की एक प्रस्तुति विवश जनता के नाम

Everyoung Global Intellectual Foundation

देवदूत

खलील जिब्रान

अनुवादक : ज़ेहन-निशीन

अनुराग की एक प्रस्तुति विवश जनता के नाम

Everyoung Global Intellectual Foundation

© सर्वाधिकार सुरक्षित। निजी अध्ययन, अनुसंधान, समालोचना अथवा समीक्षा के उद्देश्यों के लिए किसी भी उचित उपयोग के अतिरिक्त, किसी भी व्यावसायिक उद्देश्य के लिए इस प्रकाशन का कोई भी भाग कॉपीराइट के स्वामी की पूर्व अनुमति बिना प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

सर्वाधिकार एवर यंग ग्लोबल इन्टेलेक्चुवल फाउन्डेशन, काठमाण्डौ, नेपाल के नाम सुरक्षित हैं।

प्रथम प्रकाशन : 2016 ई.

ISBN: 978-9937-9115-5-9
Everyoung Global Intellectual Foundation
Ward 11, Gokarneshwor Municipality,
Kathmandu, NEPAL
Website: www.eygif.org
Contribution: NRs: 1000/= or USD 10.00

साहित्य के संसार की एक उत्कृष्ट कृति

प्रस्तावना

मानव निवास एवं रहन-सहन तथा पर्यावरण के हर क्षेत्र में निर्दयी द्वन्द्वों का संसार, अत्यन्त दुर्भाग्यवश, हमारा जगत है । इस परिस्थिति का सबसे बड़ा उदाहरण सेना, पुलिस, अदालतों, कारागारों तथा इन सब की आधारभूत संरचना, जैसे अस्त्रशस्त्र आदि हैं, जो विश्व के उत्पादन का एक तिहाई से आधा समाप्त कर जाते हैं, और जो शेष पर, न केवल प्रभुत्व जमाए बैठे हैं, अपितु उसे सत्यानाश करने के गंभीर भय का स्रोत भी हैं ।

हम युद्ध की एक प्रणाली के चंगुल में जकड़े हुए हैं, जिससे हमारी कोई सुरक्षा नहीं है ।

जिस तरह से हम से हो सके, हमें इस युद्ध में लड़ना ही होगा, और वर्तमान संसार की इन विनाशकारी परिस्थितियों के विरुद्ध संग्राम करने के लिए हमने अपना सम्पूर्ण प्रयास करने का चयन किया है ।

हमारा शस्त्र साहित्य है । और हमारे प्रथम आक्रमण का आरम्भ इन कृतियों से हो रहा है । इन का सेनापति खलील जिब्रान है ।

खलील जिब्रान (1883 से 1931 ई) इस जगत के करोड़ों लोगों का प्रिय लेखक बना, और है, और यह अकारण नहीं है ।

खलील जिब्रान की कृतियों के उत्तमतर बोध एवं उन से अधिक आनंद पाने के लिए मानव-दर्शन के विकास के इतिहास की थोड़ा सी समीक्षा करना आवश्यक है ।

पुनर्जन्म होने की परिकल्पना प्राचीन है तथा इसे सम्भवतः प्रकृति के सामान्य अवलोकन से प्राप्त किया गया है : दिन के पश्चात् रात और रात के बाद दिन का आगमन; दिवाकर का लुप्त हो जाना तथा पुनः प्रकट होना; ऋतुवों

की आवर्ती प्रकृति, वृक्षों एवं वनस्पतियों पर पत्तियों को प्रकट होना तथा शरद ऋतु में उनका उतर जाना...

महात्मा बुद्ध ने अपने देहावसान के क्षण में शोकाकुल अपने शिष्य, आनंद को सांत्वना दी थी, "नहीं आनंद, रोते नहीं । क्या मैंने यह पहले ही तुमसे नहीं कहा है कि हमारे प्रियजनों से हमारा वियोग अपरिहार्य है? जो कुछ भी जन्मा है, जो कुछ भी उत्पन्न होता है, अनुकूलित किया जाता है, स्वयं उसके भीतर ही उसके विनाश की प्रकृति छुपी होती है । इसका कोई अन्य विकल्प हो ही नहीं सकता है ।"

यूनानी दार्शनिक अनाक्सागोरस (500–428 ई. पू.) ने घोषणा की, "भौतिक संसार में, प्रत्येक वस्तु में समस्त वस्तुओं के अंश समावेश होते हैं ।" उदाहरण के लिए, "कोई पशु जो आहार करता है, वह उसकी अस्थि, बाल, मांस आदि में परिवर्तन होता है, अतः अवश्य इसमें पहले ही वे सभी तत्व होने चाहियें ।" यहाँ यह कहना भी उचित होगा कि एथेंस के न्यायालय ने अनाक्सागोरस के विरुद्ध मृत्युदण्ड का निर्णय सुनाया, क्योंकि उसने "दिनकर एक अग्निमय चट्टान है" कहा था, जो धर्म के सिद्धांत के विपरीत था । परन्तु अनाक्सागोरस ने एथेंस को सदा के लिए त्याग कर खुद को बचा लिया था ।

यथार्थता अथवा अयथार्थता की अवधारणा विकास के कई चरणों से गुज़री और विभिन्न अवधियों के पश्चात् कई मानकों तक पहुँची । इस संदर्भ में यहाँ एक संबंधित कितीर्मान उल्लेखनीय है जो शंकराचार्य में दिखाई देता है, जिस (शंकराचार्य) ने हर किसी वस्तु को एक भ्रम (माया) माना, वह इस कारण कि कोई भी चीज़ स्थायी नहीं है । फिर सूफीमत (रहस्यवाद) और अग्रसर हुआ तथा उसने वहदत-उल वजूद (अस्तित्व की एकता) और वहदत-अश शहूद (साक्ष्य की एकता) के साथ साथ प्राचीन अर्बी अवधारणायें बरज़ख (वह स्थान जहाँ, उनके कथन

अनुसार, आत्मायें पृथ्वी पर अवतरण से पहले आवास करतीं हैं), एराफ़ (पृथ्वी से प्रस्थान पश्चात् आत्माओं का आवास-स्थान) के साथ साथ साबिता, एयान एवं जोया (सूफीमत के दृष्टिकोण में तीन आध्यात्मिक चरण) तथा अन्य कई सारी अवधारणाओं को आगे बढाया।

विचार की यह सरिता अब तक के अपने अंतिम गन्तव्य-स्थान पर हेगल के द्वंद्ववाद में पहुँची (अर्थात् गमनशील यथार्थ—यथार्थता तथा अयथार्थता की अवधारणाओं पर परिचर्चा के बजाय), जिसका प्रदर्शन साहित्य में खलील जिब्रान की कृतियाँ हैं।

द्वंद्ववाद के चार आधारभूत सिद्धांतों का (जहाँ तक मैंने उन्हें समझा है) यहाँ उल्लेख करना आवश्यक होगा।

1) न्यूनतम कण से ले कर सम्पूर्ण ब्रह्मांड तक, हर अवस्थित चीज़ की सीमाएं हैं। दिन, ऋतु, जीवन-काल, युग, पृथ्वी, सौर प्रणाली, आकाशगंगा, दृश्य एवं अदृश्य ब्रह्मांड... हर किसी वस्तु की भौतिक तथा सामयिक सीमाएं हैं।

2) सीमित वस्तु असीमित से बनी है तथा असीमित सीमित से। उदाहरणार्थ, संख्या-रेखा के किसी भी क्षेत्र में असीमित बिन्दु होते हैं, और रेगिस्तान सहारा एवं संसार के सभी रेगिस्तानों की रेत के कण गिने जा सकते हैं। यहाँ यह व्यक्त करना अनिवार्य है कि असीमित केवल एक अनंत नहीं, अनंत अनंत हैं। उदाहरणार्थ, एक से दो तक जो अनंत बिन्दु हैं, और तीन से चार तक जो अनंत बिन्दु हैं, वे पृथक् पृथक् हैं।

3) सभी चीजें (प्रसन्नता, पीड़ा, मित्रता, शत्रुता, जीवन, कार्य, योगदान, मानवीय संबंध...) सार्थक हैं, किन्तु केवल अपनी सीमाओं एवं परिमाओं में, इन परिमाओं के बाहर सब कुछ अपनी संगतता एवं अर्थ खो देता है। यह परिमायें भौतिक हो सकतीं हैं (यदि आप न्यूयॉर्क या

कराची में रहते हैं तो आप अपने घर में सिंह के आने तथा आप के साथ रात का भोजन करने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं) अथवा सामयिक हो सकतीं हैं (आप ग्रीष्मकाल में शीतकालीन ठंड की अनुभूति करने की आशा नहीं कर सकते हैं)।

4) किसी भी चीज़ की एक दिशा में हो रही निरन्तर अग्रसता एक विशेष स्थान पर पहुँच कर अपने विपर्यय में परिवर्तित होती है। उदाहरणार्थ, दिन रात में और रात दिन में बदल जाते हैं। प्रतिस्पर्धा एकाधिकार की ओर तथा एकाधिकार प्रतिस्पर्धा की ओर अग्रसर होती है। “लोकतंत्र” “निरंकुशता” तथा “निरंकुशता” “लोकतंत्र” में तब्दील होती है। वसन्त ऋतु शरद ऋतु में बदल जाता है तो उसका विपरीत भी होता है...

द्वंद्ववाद के शेष सिद्धांत तथा तीन नियम इस प्रस्तावना के अभिप्राय से अलग हैं।

पुनर्जन्म होने की परिकल्पना, जन्मे हुए प्रत्येक चीज़ का संगठन एवं विखंडण, प्रत्येक वस्तु में समस्त वस्तुओं के अंश समावेश होने की बात, भ्रम (माया), सूफीमत (रहस्यवाद) की अवधारणाओं तथा द्वंद्ववाद के सिद्धांतों के विषय में इस प्राथमिक बोध के साथ, अब आप खलील जिब्रान की प्रतिभा के संग अपनी संगति का भरपूर आनंद उठा सकते हैं।

खलील जिब्रान की चित्रकारी को इन पाठ्य कृतियों में हम ने समावेश नहीं किया, वह केवल इस लिए कि भारत, पाकिस्तान तथा नेपाल में संस्कृति का स्तर अभी “लज्जास्पद” है, यद्यपि लोग अस्पतालों में जाते हैं, स्त्रीरोग विभाग में अपना परीक्षण करवाते हैं, शल्यचिकित्सा करवाते हैं, तथा अपने सम्पूर्ण परिधान उतार कर अपने निर्वस्त्र शरीर शल्यचिकित्सकों, उनके सहभागियों और अन्य लोगों के सुपुर्द करते हैं, और यद्यपि महावीर जैन,

ललेशवरी अतः अन्य लोगों की एक विस्तृत श्रृंखला ने कोई वस्त्र धारण नहीं किए, तथा लोगों ने उन्हें उच्चतम सम्मान से भी सम्मानित किया।

पाठकों में से किसी को भी वैसी “लज्जा” से बचाने के लिए, हमने इन पुस्तकों में चित्रकारी शामिल न करने का निर्णय किया। जो पाठक उन चित्रों का अवलोकन करना चाहते हैं वे

http://www.inner-growth.info/khalil_gibran_prophet/html/galleries/gibran_gallery1.htm

पर जा सकते हैं।

अधिक किसी विलंब बिना, आइये अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं। हमें आशा है कि इन पुस्तकों से आप आनंदमग्न होंगे तथा यह आपके हितों का अभिषेक करेंगी।

ज़ेहन निशीन
मार्च 4, 2016

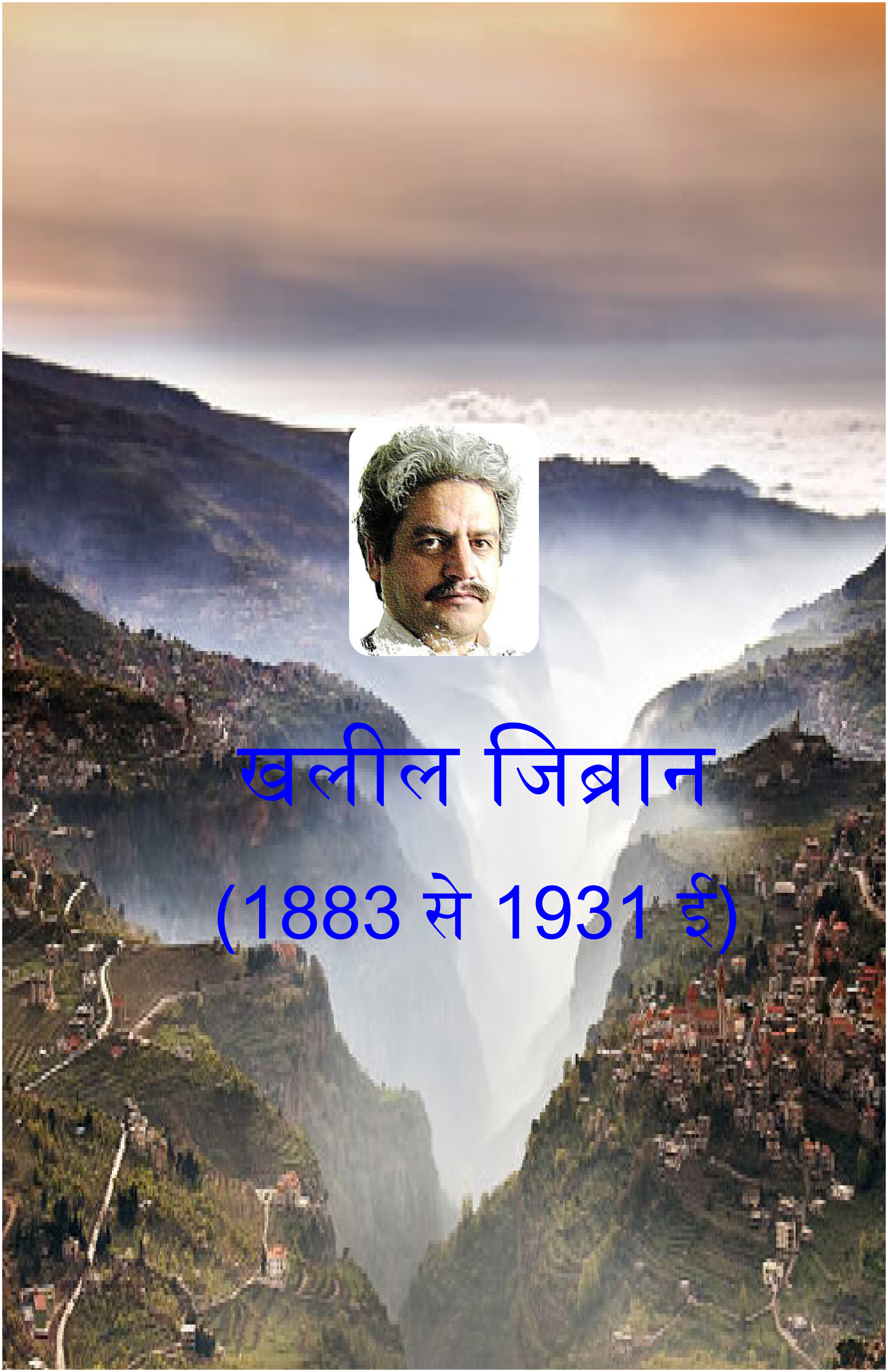

खलील जिब्रान

(1883 से 1931 ई)

विषय सूचि

प्रस्तावना	i
जहाज़ का आगमन	1
प्रीति	8
विवाह	12
बच्चे	14
दान	16
खानपान	20
कार्य	22
सुख और व्यथा	26
मकान	28
परिधान	32
क्रय विक्रय	34
अपराध तथा दण्ड	36
नियम	41
स्वतंत्रता	44
बुद्धि एवं भावना	47
दर्द	49
आत्मज्ञान	51

विषय सूचि

शिक्षा	53
मित्रता	55
संवाद	57
समय	59
सज्जनता तथा दुष्टता	61
पूजा	65
आनन्द	68
सौंदर्य	72
धर्म	75
मृत्यु	78
विदाई	80

जहाज़ का आगमन

जो चयनित तथा प्रिय था, जो स्वयं अपने दिन की प्रभात था, उस अल्मुस्तफा ने अनाथा प्रदेश में अपने जहाज़ की बारह वर्ष तक प्रतीक्षा की थी, जिसे वापस आना था और उसे पुनः अपने जन्म के द्वीप पर ले जाना था।

बारहवें वर्ष के फसलों की कटाई के महीने, सितम्बर के सातवें दिन वह शहर के प्राचीर से बाहर पर्वत पर चढ़ा तथा समुद्र की ओर देखा, उसे हल्के कोहरे के साथ अपने आते हुए विमान का दर्शन हुआ।

तब उस के हृदय के द्वार निसंकोच खुल गए, तथा उसका परम-हर्ष सागर में दूर दूर तक लहलहा उठा। और उस ने अपने नेत्र बंद किए एवं अपनी आत्मा के मौनत्व में वंदना की।

परंतु जैसे ही वह पहाड़ी से उतरने लगा, उस पर उदासी छायी और वह अपने मन में मनन करने लगा :

यहाँ से संतुष्टि के साथ तथा व्यथा के बिना कैसे जा सकता हूँ मैं? नहीं, आत्मा में एक गंभीर घाव लिए हुए बिना यहाँ से मैं प्रस्थान नहीं हो सकता।

इस नगर के प्राचीर में मेरे बिताए हुए दर्द भरे दिन लम्बे थे, तथा अकेलेपन की रातें लंबी थीं; भला कौन अपने दर्द तथा अपनी तन्हाई से बिना खेद प्रस्थान हो सकता है?

इन गलियों में, अपनी आत्मा के अनगिनत टुकड़े मैं ने

बिखेरे हैं, और मेरी आकांक्षाओं के बच्चे अनगिनत हैं, जो इन पहाड़ियों में नंगे घूमते हैं, तथा एक बोझ एवं पीडा न लिए उन से मैं अलग हो नहीं सकता ।

यह कोई वस्त्र नहीं जिसे मैं आज उतार फेंकने जा रहा हूँ, अपितु यह एक त्वचा है जिसे मैं अपने हाथों से उधेड़ रहा हूँ ।

न ही यह कोई विचार है जिसे मैं अपने पीछे छोड़ने जा रहा हूँ, परंतु यह भूख एवं प्यास से मधुर हुआ एक हृदय है ।

फिर भी, मैं अब और ठहर नहीं सकता ।

हर चीज को अपने यहाँ आमंत्रित करने वाला सागर मुझे पुकार रहा है, तथा मुझे यात्रा का सामान बांधना ही है ।

यद्यपि क्षण रात में जलते रहते हैं, परंतु ठहरना ठिठुराने तथा बिल्लौर बन जाने के समान है ।

यहाँ की प्रत्येक वस्तु मैं खुशी से अपने साथ ले जाता, मगर कैसे?

भाषा तथा होंठ जो आवाज़ को उड़ान की शक्ति प्रदान करते हैं, उस भाषा तथा उन होठों को वही आवाज़ अपने साथ उठा नहीं सकती है ।

तथा गरुड़ अकेले तथा बिना नीड़ आदित्य के पार उड़ानमग्न हो जाएगा ।

पहाड़ी के दामन में पहुँचने के पश्चात् जब उस ने पुनः सागर की ओर नज़र दोड़ाई तो देखा कि उस का जहाज़ बंदरगाह के समीप पहुँच रहा था, जिसकी नोक पर

जहाज़ी थे, जो उस के अपने देश के लोग थे।

तो उसकी आत्मा उन्हें पुकार उठी :

मेरी प्राचीन जन्मदात्री के पुत्रो ! ए ज्वारों पर यात्रा करने वालो !

कितनी ही बार तुम मेरे सपनों में यात्रामग्न रहे हो। और अब तुम मेरी जागरूकता में आए हो, जो मेरा गहनतम स्वप्न है।

सफ़र पर निकलने को तैयार हूँ मैं, यात्रा की सामग्री से सुसज्जित भ्रमण करने की मेरी रुचि अनुकूल पवन की प्रतीक्षारत है।

इस स्थिर वायु में केवल एक और साँस लूँ, पीछे की ओर पुनः केवल एक और प्यार भरी नज़र डालूँ मैं;

फिर मैं तुम्हारे बीच खड़ा हूँगा : जहाज़ियों की पंक्ति में एक जहाज़ी।

तथा तुम अथाह महासागर : सोई हुई माता श्री !

जो धाराओं तथा नदियों को शांति तथा स्वतंत्रता देने वाली एकमात्र हस्ती है;

यह धारा बस एक और बल खाएगी, इस चारागाह में यह एक बार और सरसराएगी,

फिर मैं तुम्हारे पास चला आऊँगा, एक असीम बूंद, अथाह महासागर में।

और जब वह चले आ रहा था, उसने दूर से महिलाओं व सजनों को अपने-अपने खेत तथा अंगूर के बाग छोड़कर नगर के द्वार की ओर दौड़े आते हुए देखा।

तब उसने उनके स्वर सुने, जो उसका नाम पुकार रहे थे; तथा खेत-ब-खेत एक आपस में उस के जहाज़ के आगमन की सूचना दे रहे थे।

तब उसने स्वयं से कहा :

क्या वियोग का दिन सम्मेलन का दिन होगा?

क्या यह कहा जाए कि मेरी संध्या वास्तव में मेरी प्रभात थी?

मैं उस व्यक्ति को भला क्या दूं जो अपने हल-बेल अर्द्ध लीक में छोड़ कर अथवा अर्क-ए-अंगूर का भभका बंद कर के मेरे पास आया?

क्या मेरा हृदय फलों से लदा हुआ एक वृक्ष बन सकता है कि मैं सारे फल उनके सदके कर सकूँ।

काश कि मेरी अभिलाषायें फ़ौवारे के रूप में बह निकलतीं और मैं उनके कटोरों को लबालब भर देता।

क्या मैं एक वीणा हूँ कि सर्वशक्तिमान के हाथ मुझे छूएँ, या क्या मैं एक बांसुरी कि उसकी साँस मुझ में गुज़रे?

मैं तो मौनत्व का एक खोजकर्ता हूँ। परंतु मैं ने सन्नाटे में कौन सा कोष पाया है कि जिसे मैं विश्वास के साथ प्रदान करूँ?

यदि यह मेरा समर-प्राप्ति का दिन है, मैं ने किन खेतों में एवं किन भूले हुए ऋतुओं में बीज डाले हैं।

अगर यह सचमुच मेरी कंदील उठाने की घड़ी है, उसमें जलने वाली लौ मेरी नहीं होगी।

अपनी कंदील खाली तथा अंधियारी ही उठाऊंगा मैं,
तथा रात का रक्षक इसमें तेल डालेगा इसे दीप्तिमान् भी करेगा ।

ये बातें उसने शब्दों में व्यक्त कीं । परंतु उसके हृदय में बहुत कुछ अव्यक्त रह गया । क्योंकि वह स्वयं अपना गहनतम रहस्य बोल न सका ।

और जब वह शहर में प्रवेश हुआ, सभी लोग उसकी मुलाकात को उमड़ पड़े । मानों वे एक ही आवाज़ से उसे पुकार रहे हों ।

तथा शहर के वृद्ध आगे बढ़े और अनुरोध किया :

अभी हमें छोड़ कर मत जाओ ।

हमारी धुँधली साँझ में तुम उज्ज्वल मध्याह्न हो, तथा तुम्हारे यौवन ने हमें सपनों से ज्ञात किया है ।

हमारे बीच तुम न तो अज्ञात हो न अतिथि, अपितु तुम हमारे सपूत हो जिसे हम अथाह प्यार करते हैं ।

अभी हमारी आँखों को अपने चेहरे के दर्शन के लिए मत तरसाओ ।

और पुजारियों तथा पजारनियों ने उससे यह कहते हुए संबोधन किया :

सागर की तरंगों को अब हमें अलग करने न दो । ऐसा न होने पाए कि हमारे बीच तुम्हारे बिताए हुए क्षण अतीत की स्मृति हो जायें ।

तुम हमारे बीच आत्मा बन कर घूमे फिरे, और तुम्हारा साया हमारे चेहरों पर प्रकाश बनकर रहा।

हमने तुमसे बहुत प्रेम किया है। परंतु हमारा प्यार अभिव्यक्ति से वंचित था तथा वह पर्दों से छुपा हुआ था।

परंतु आज यह ज़ार-ज़ार तुम से प्रार्थी है और अपना प्रत्यक्षीकरण करना चाहता है।

और सदैव यही होता आया है कि पृथकीकरण के समय तक प्यार को अपनी गहनता प्रति अज्ञानता रहती है।

अन्य लोग भी आए तथा उससे आग्रह किया। किंतु उसने उन्हें उत्तर न दिया। उसने केवल अपना सिर झुकाया, और समीप खड़े लोगों ने उसके सीने पर अश्रु गिरते देखे।

तब वह तथा अन्य लोग मंदिर के सामने स्थित विशाल चबूतरे की ओर बढ़े।

वहाँ, इस पवित्र स्थल से एक महिला निकली जिसका नाम अल्मित्रा था। वह एक भविष्यद्रष्टा थी।

उसने अल्मित्रा को अत्यधिक कोमलता से देखा, क्योंकि यही वह महिला थी जिसने उसे सब से पहले देखा तथा उस पर विश्वास किया था, जबकि वह उन लोगों के नगर में केवल एक दिन पूर्व आया था।

तथा उस महिला ने यह कहते हुए इसका स्वागत किया :

ईश्वर के दूत, सर्वोच्च के खोजकर्ता ! अपने जहाज़ के लिए तुम मुद्दतों दूर-दूर तक नजरें गाड़ते रहे।

अब तुम्हारा जहाज़ आ चुका है अतः तुम्हें अब जाना ही होगा।

तुम्हारी स्मृतियों की भूमि तथा तुम्हारी बड़ी इच्छाओं के निवास के लिए तुम्हारी तड़प गहन है, अतः हमारा प्रेम तुम्हें बांधेगा नहीं, न हमारी जरूरतें तुम्हें रोकें गी।

फिर भी हमें अलविदा कहने से पूर्व, तुम से हमारा यह आग्रह है कि तुम अपना सत्य हम पर प्रकट करो, अपना सत्य हमें प्रदान करो।

और हम अपने बच्चों को तथा फिर वह अपने बच्चों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण करते रहेंगे, तथा यह नष्ट नहीं होगा।

अपने एकांत में तुम ने हमारे दिनों की निगरानी की है तथा अपनी जागरूकता में तुम ने हमारी नींद के रोदन एवं हँसी की आवाज़ें सुनी हैं।

इसलिए अब हमारी वास्तविकता हम पर प्रकट करो, तथा हमें वह सब बताव जो जन्म तथा मृत्यु के बीच तुम पर उजागर हुआ है।

तथा उसने उत्तर दिया :

अनाथा प्रदेश के निवासियो ! तुम्हारी आत्माओं में जो इस क्षण भी परिक्रमणमय है, उसके सिवा मैं और क्या कह सकता हूँ?

प्रीति

तब अल्मित्रा ने कहा, हमें प्रीति के बारे में बताओ ।

तब उसने सिर उठाकर लोगों को गौर से देखा, तथा लोगों पर एक मौनता विद्यमान हुई । फिर उसने एक उच्च स्वर में कहा :

जब प्रीति तुम्हें पुकारे, उसके पीछे अग्रसर हो जाओ,

यद्यपि उसकी पथ कठिन तथा अत्यधिक ढलुवाँ है ।

तथा जब उसके पंख तुम्हें घेर लें, उसे स्वीकार करो,

यद्यपि उसकी पंख में छिपी तलवार तुम्हें घायल कर सकती है ।

तथा जब वह तुम से संबोधन करे, उसका विश्वास करो,

यद्यपि उसकी आवाज तुम्हारे सपनों को इस तरह से ध्वस्त कर सकती है जैसे उत्तर की पवन उद्यान को उजाड़ देती है ।

....

क्योंकि जिस तरह मुहब्बत तुम्हारा राज्याभिषेक करती है, उसी तरह वह तुम्हें सूली पर चढ़ाएगी । जिस तरह वह तुम्हारे विकास के लिए है, वैसे ही वह तुम्हारी छँटाई के लिए भी है ।

जिस तरह से वह तुम्हारी ऊँचाई तक चढ़ती है तथा धूप में लहलहाने वाली तुम्हारी सब से संवेदनशील टहनियों को प्यार से छूती है,

वैसे ही वह तुम्हारी जड़ों तक नीचे उतरती है तथा उनके भूमि के साथ बलशाली जोड को हिला कर रख देती है।

मकई के गुच्छों की तरह, वह तुम्हें अपने पास जमा करती है।

तुम्हें नग्न करने के लिए वह तुम्हें गाहती है।

तुम्हें फूस से अलग करने के लिए छानती है।

तुम्हें पीस कर सफीद करती है।

और गोंध गोंध कर कोमल बनाती है।

फिर, वह तुम्हें अपनी पवित्र अग्नि के हवाले कर देती है, ताकि तुम ईश्वर के पावन भोजन के लिए पवित्र रोटी बन सको।

प्रीति तुम से यह सारी चीज़ें करेगी ताकि तुम अपने हृदय के रहस्य जान सको, तथा इस बोध के कारण जीवन के हृदय का एक अंश बन सको।

परंतु यदि अपने भय के कारण तुम सिर्फ प्यार के आराम तथा सुख के खोजकर्ता हो,

तब तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम अपनी नग्नता पर पर्दा डालो तथा गाहे जाने के फर्श से भाग जाओ,

भाग जाओ उस ऋतु बिना के संसार में, जहाँ तुम हँसो मगर हृदय खोले बिना, तथा रोवो पर अपने पूर्ण अश्रु बचा के।

प्रीति न कुछ याद देती है, न लेती है, अपने सिवा।

प्रीति किसी चीज की मालिक नहीं, न यह किसी की संपत्ति है;

क्योंकि मुहब्बत प्रीति के लिए आत्मनिर्भर है ।

जब तुम प्रीति में हो तुम्हें यह नहीं कहना चाहिए, “परमेश्वर मेरे हृदय में है ।” परंतु यह कहो, “मैं परमेश्वर के हृदय में हूँ ।”

और यह मत सोचो कि तुम मुहब्बत का सिलसिला मनचाहे ढंग में निर्धारित कर सकोगे, क्योंकि अगर वह तुम्हें योग्य समझे, तो प्रीति तुम्हारा पथ निर्धारित करेगी ।

मुहब्बत की कोई दूसरी अभिलाषा नहीं है, स्वयं अपने परिपूर्ण होने के सिवा ।

परंतु अगर तुम प्यार करते हो, और तुम्हारी इच्छायें भी होनी चाहिएँ, तो तुम्हारी इच्छायें निम्नानुसार हों :

पिघल कर ऐसी प्रवाहरत नदिका बन जाना जो रात को अपना मधुर गान सुनाती है ।

अत्यधिक कोमलता की पीडा जान जाना ।

स्वयं अपनी मुहब्बत के विषय में समझ से घायल हो जाना;

स्वैच्छा एवं प्रसन्नता से अपना खून-ए जिगर बहाना ।

प्रभात में प्रसन्न हृदय के साथ जागना तथा मुहब्बत के एक अधिक दिन के लिए कृतज्ञता अनुभव करना;

दोपहर को आराम करना और मुहब्बत के परमानन्द

में विचारमग्न होना;

आभारी भाव में मस्त साँझ को घर वापस लौटना;

तथा फिर अपनी प्रेमिका के लिए हृदय में प्रार्थना के साथ तथा लबों पर प्रशंसा का गीत ले के सो जाना।

विवाह

तब अल्मित्रा फिर बोली और पूछा, “शिक्षक जी ! और विवाह के विषय में आपका मत?”

तो उसका उत्तर यह रहा :

तुम एक साथ पैदा हुए थे तथा हमेशा साथ रहोगे ।

तुम उस समय भी साथ होगे जब मौत के सफेद पंख तुम्हारे दिनों को बिखेर देंगे ।

अरे हाँ, तुम परमेश्वर की ध्वनि रहित स्मृति तक में भी इकट्ठे रहोगे ।

परंतु तुम्हारी निकटता में अंतराल रहने दो ।

तथा देवलोक की आँधियों को तुम्हारे बीच नृत्य करने दो ।

एक दूसरे से मुहुब्बत करो, परंतु मुहब्बत को अपनी बाध्यता न बनाओ :

परंतु उसे अपनी आत्माओं के तटों के बीच एक बहता समुद्र होने दो ।

एक दूसरे का प्याला भर दो, परंतु एक ही प्याले से न पियो ।

एक दूसरे को अपनी रोटी दो, मगर दोनों एक अदद रोटी ही से मत खाओ ।

साथ साथ नाचौ, गाओ तथा खुशियां मनाव, किंतु तुम में से हर एक का अपना अपना अस्तित्व हो,

जैसे सारंगी की तारें एक ही संगीत पे कँपकँपाने के बावजूद अलग अलग ही रहतीं हैं।

अपने हृदय दो, मगर एक दूसरे की स्वामित्व में नहीं।

क्योंकि केवल जीवन का हाथ ही तुम्हारे दिलों को थाम सकता है।

तथा साथ में खड़े रहो, मगर बहुत ही नज़दीक नहीं :

क्योंकि मंदिर के स्तंभ अलग अलग होते हैं,

तथा शाहबलूत तथा सर्व के वृक्ष एक दूसरे की छाया में नहीं बढ़ते हैं।

बच्चे

तब एक महिला, जिस ने अपने वक्षस्थल से एक बच्चे को लगा रखा था, बोली कि हमें बच्चों के बारे में बताओ ।

तथा उसने कहा :

तुम्हारे बच्चे तुम्हारे नहीं हैं ।

वह जीवन की अपनी दीर्घकालीन अभिलाषा के पुत्र एवं पुत्रियाँ हैं ।

वह तुम्हारे माध्यम से आते हैं परंतु तुम से नहीं, तथा यद्यपि वह तुम्हारे साथ रहते हैं, वह तुम्हारी संपत्ति नहीं हैं ।

तुम उन्हें अपना वात्सल्य दे सकते हो, परंतु विचार नहीं,

क्योंकि उनके अपने विचार हैं ।

तुम उनके शरीरों को आवास दे सकते हो, किंतु उनकी आत्माओं को नहीं,

क्योंकि उनकी आत्माएं भविष्य के घर में निवासशील होतीं हैं, जहाँ तुम्हारा सपनों में भी गुज़र नहीं हो सकता ।

तुम उनके जैसा होने का यतन कर सकते हो, परंतु उन्हें अपने जैसा बनाने की कोशिश न करो ।

क्योंकि जीवन पीछे की ओर यात्रा नहीं करता है, न ही कल के साथ निवास करता है ।

तुम वह धनुष हो जिन से तुम्हारे बच्चे, जीवित वाणों की भाँति, चलाए जाते हैं।

धनुर्धर असीमित के पथ पर निशाना लगाता है तथा अपनी शक्ति से तुम्हें मोड़ता है ताकि उस के तीर गति से अधिक दूर तक जा सकें।

धनुर्धर के हाथों तुम्हारा झुक जाना प्रसन्नता से होने दो।

क्योंकि जिस तरह से वह गतिशील वाण से प्रेम करता है उसी तरह से वह स्थायी धनुष से भी प्रेम-मग्न है।

दान

तब एक धनी व्यक्ति ने कहा, हमें दान के बारे में बताओ।

तथा उसने जवाब दिया :

जब तुम अपने स्वामित्व में रही किसी चाज़ का दान करते हो, तो तुम वास्तव में बहुत छोटा दान देते हो।

जब तुम अपने आप से दिया करो, तो तुम वास्तव में कुछ देते हो।

क्योंकि तुम्हारे अधिकार में विद्यमान उन वस्तुओं के सिवा तुम्हारी संपत्ति क्या है जिन्हें तुम इस डर से बचाए रखते हो कि उनकी भविष्य में आवश्यकता पड़ सकती है?

और कल, आने वाला कल, उस अत्यधिक सावधान कुत्ते को क्या पेश करेगा जो पवित्र शहर के तीर्थयात्रियों के पीछे पीछे चलते चलते संकेतहीन मरुभूमि में हड्डियाँ छुपाता रहता है?

और ज़रूरत का भय स्वयं जरूरत के बिना क्या है?

कुआँ लबालब भरा होते हुए भी प्यास का भय क्या वह तृष्णा नहीं है जो कभी तृप्त नहीं हो सकेगी?

कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी बेहद संपत्ति से थोड़ा दान करते हैं : और वे लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए वैसा करते हैं, तथा उनकी यह अदृश्य इच्छा उनके दान को रोगी बना देती है।

कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनके पास बहुत कम है और वे

अपना सब कुछ दे देते हैं।

यही वे लोग हैं जिन्हें जीवन तथा जीवन की उदारता पर विश्वास है, तथा उनके भंडारण-स्थल कभी खाली नहीं होते हैं।

ऐसे व्यक्ति भी हैं जो प्रसन्नता से देते हैं, तथा वह प्रसन्नता ही उनका पुरस्कार है।

तथा ऐसे व्यक्ति भी हैं जो पीड़ा महसूस करते हुए देते हैं, तथा उनकी वही पीड़ा उनका पवित्र स्नान होती है।

और कुछ ऐसे भी होते हैं जो देते हैं और इस प्रक्रिया में न पीड़ा महसूस करते हैं, न खुशी के अभिलाषी होते हैं, तथा न पुण्य का विचार रखते हैं।

वे इस तरह देते हैं जैसे कहीं किसी घाटी में अर्गवान-सुमन खुले वातावरण में अपना सौरभ बिखेर देते हैं।

ऐसे ही मनुष्यों के हाथों से परमेश्वर संवाद करता है तथा उनकी दृष्टि के पीछे वह धरती देख मुस्कुराता है।

विनती किए जाने पर देना सही है, परंतु बिन-माँगे, अपने विवेक की बदौलत देना बेहतर है;

उदार आदमी के लिए ज़रूरतमन्द व्यक्ति की तलाश सहायता देने से अधिक खुशी का कारण है।

क्या कोई वस्तु है जिसे तुम बचा के रखोगे?

तुम्हारा सब कुछ एक दिन भुगतान किया जाएगा;

इसलिए अभी प्रदान करो, ताकि प्रदान करने का मौसम तुम्हारा हो, न कि तुम्हारे वंशजों का।

....

तुम अक्सर कहते हो, "मैं दे देता किंतु केवल पात्र व्यक्तियों को।"

तुम्हारे उद्यान के वृक्ष ऐसा नहीं कहते हैं, न ही तुम्हारी चरागाह के झुंड ऐसा कहते हैं।

वे देते हैं ताकि वे जीवित रहें, क्योंकि रोक के रखना नष्ट हो जाना है।

जो व्यक्ति अपने दिन तथा अपनी रातें प्राप्त करने का अधिकारी है, वह निस्संदेह तुम से अन्य सभी चीजें प्राप्त करने का हकदार है।

तथा जिसने जीवन के महासागर से पीने का अधिकार पाया है, वह तुम्हारी ज़रा सी नदिका से अपना प्याला भरने का हकदार भी है,

उदारता में नहीं, परंतु सहायता स्वीकार करने की हिम्मत तथा विश्वास में आवासित मरुभूमि से बढ़ा रेगिस्तान क्या हो सकता है?

तथा तुम कौन होते हो कि लोग तुम्हारे सामने अपना वक्षस्थल चीर ड़ालें तथा अपना स्वाभिमान अनावृत करें, ताकि तुम उनकी हैसियत को नग्न एवं उनके सम्मान को अपमानित हुए देख सको?

पहले इस बात पर विचार करो कि तुम स्वयं दान देने तथा इस प्रक्रिया का उपकरण बनने के पात्र हो भी कि नहीं।

क्योंकि वास्तव में यह जीवन है जो जीवन को देता है, जबकि तुम, जो स्वयं को दाता समझते हो, केवल

एक साक्षी हो ।

....

और ए लेने वालो, तुम—तथा तुम सब के सब लेने वाले ही हो—स्वयं को कृतज्ञता के भार से बोझिल मत करो, नहीं तो तुम अपने आप तथा सहायता करने वाले को भी एक फंदे में फँसा लोगे ।

अलबत्ता, जैसे पंखों से उड़ान भरी जाती है, वैसे ही सहायता करने वाले के साथ उस के दान के सहारे ऊपर उठो ।

क्योंकि अपने ऋण का अत्यधिक ध्यान रखना, दानी की उदारता पर संदेह करने के बराबर है, जबकि उसकी माता खुले हृदय की मालिकिन, धरती, तथा परमेश्वर इसका पिता है ।

खानपान

तब एक सराय की रखवाली करने वाला एक वृद्ध बोला, हमें खानपान के बारे में बताइए :

तथा उसने उत्तर दिया :

काश ऐसा होता कि तुम पृथ्वी के सौरभ पर जीवन गुजार लेने पाते अथवा एक पवन-पौधे की तरह प्रकाश के सहारे जीवित रह सकते !

परंतु चूँकि तुम्हें भोजन के लिए हत्याएँ करनी ही पड़ेंगीं, तथा अपनी प्यास बुझाने की खातिर नौजन्मे को उसकी माँ के दूध से वंचित करना ही होगा, तब इस प्रक्रिया को एक पूजा हो जाने दो।

तथा अपने क़साई-फलक को वेदिका-स्थल होने दो, जिस पर मनुष्य-हृदय के शुद्ध एवं निर्मल तथा निर्दोषतम के लिए वन तथा मैदान के साफ हृदय और निर्दोष पशु-पक्षी बलिदान किए जाएं।

जब तुम किसी पशु की हत्या करो, तो अपने हृदय में उसे बताओ :

"जो शक्ति तुम्हारी हत्या करती है, उसी शक्ति द्वारा मैं भी मारा जाऊँगा, तथा मुझे भी खा लिया जाएगा।

"क्योंकि जिस कानून ने तुम्हें मेरे हाथों में सौंपा है, वही कानून मुझे भी अधिक शक्तिशाली हाथों में सौंप देगा।

"तुम्हारा रक्त तथा मेरा खून स्वर्ग के वृक्ष की सिंचाई करने वाले रस के सिवा कुछ नहीं है।"

....

तथा जब तुम अपने दांतों से किसी सेब को चबाते हो, अपने हृदय में उसे इस तरह संबोधन करो :

"तुम्हारे बीज मेरे शरीर में जीवित रहेंगे।

"तथा तुम्हारी भविष्य के युग की कोपलें मेरे हृदय में खिलेंगी,

"और तुम्हारी खुशबू मेरी साँस होगी,

"तथा हम साथ साथ हर मौसम में आनंदित होंगे।"

और शरद ऋतु में जब तुम द्राक्षासव निचोड़ने के लिए अपने अंगूर के उद्यान से अंगूर इकट्ठा करते हो, तो अपने हृदय में कहो :

"मैं भी एक अंगूर की बेल हूँ, तथा मेरा फल द्राक्षासव निचोड़ने के लिए एकत्र किया जाएगा,

"तथा नई मदिरा की तरह मैं भी अनन्त पात्रों में रखा जाऊँगा।"

तथा शीत-ऋतु में, जब तुम सुराही से मदिरा निकालो तो प्रत्येक प्याले के लिए हृदय में एक गीत गाते रहो,

और वह गाना शरद-ऋतु के दिनों, अंगूर के बाग तथा शराब के कोल्हू की स्मृतियों से परिपूर्ण हो।

कार्य

तब एक किसान ने कहा, हमें काम के संबंध में बतावो ।

उसने यह जवाब दिया :

तुम इसलिए काम करते हो कि तुम अचला तथा उसकी आत्मा से सह-गति में चल सको ।

क्योंकि बेकार रहना मौसमों के साथ अनजान होने, तथा वैभव एवं गौरव के अनुपालन के साथ, अनंत की ओर अग्रसर न होने, और जीवन के जन-समूह से बाहर निकलने के समान है ।

काम करते समय तुम एक बांसुरी हो जाते हो, जिस के हृदय से क्षणों की कानाफूसी संगीत बन जाती है ।

जब हर कोई व्यक्ति सुसंगत में एक सामूहिक गीत गा रहा हो, तो तुम में से कौन एक मौन एवं गूंगा नरकट बन के रहना पसंद करेगा?

तुम से सदा यही कहा जाता रहा है कि काम एक अभिशाप तथा मजदूरी अभाग्य है ।

अपितु मैं कहता हूँ कि जब तुम काम करते हो तो तुम पृथ्वी के दूरगामी सपने के एक हिस्से को साकार करते हो, जो स्वप्न तुम्हारे उदय होने के क्षण तुम्हें सौंपा गया था ।

और श्रम से स्वयं को संलग्न कर के तुम वास्तव में जीवन से प्रेम-लिप्त होते हो,

तथा मजदूरी द्वारा जीवन से प्रेम करना ज़िन्दगी के गहनतम रहस्य से परिचित होना है।

किंतु, पीड़ा का सामना होने की स्थिति में, यदि तुम अपने जन्म को एक कष्ट तथा शरीर की देखरेख को अपने मस्तिष्क पर लिखा एक अभिशाप बताते हो, तब मेरा जवाब यह है कि तुम्हारे ललाट के पसीने के सिवा कोई दूसरी चीज़ इस लिखावट को धुल न सकेगी।

तुम्हें यह भी बताया गया है कि जीवन अंधकार है, और अपनी थकान में तुम वही आवाज प्रतिध्वनित करते हो जो किसी शिथिल व्यक्ति का बयान थी।

परंतु मैं कहता हूँ, जीवन सचमुच में अँधेरा है, केवल उस अवस्था के सिवा जब उत्कंठा हो,

और प्रत्येक अभिलाषा अंधी है, यदि ज्ञान न हो।

तथा कर एक ज्ञान बेकार है, यदि कार्य न हो,

और हर काम व्यर्थ है, यदि कार्य से प्रणय न हो;

और जब तुम प्रणय से अभ्यास में व्यस्त होते हो, तुम स्वयं को अपने आप से, एक दूसरे से, तथा परमेश्वर से जोड़ देते हो।

....

और मुहब्बत के साथ काम करना क्या होता है?

यह तुम्हारे हृदय के काते हुए धागों से कपड़े बुनना

है, मानों तुम्हारी प्रेमिका उन्हें परिधान करने वाली हो।

यह अनुराग से एक घर का निर्माण है, मानों उस घर में तुम्हारी प्रेमिका निवास करने वाली हो।

यह कोमलता से बीज बोना एवं प्रसन्नता से फसल काटना है, जैसे कि तुम्हारी प्रेमिका वह फल खाने वाली हो।

यह तुम्हारे हाथों रचना की जाने वाली हर चीज़ में तुम्हारा अपना भाव फूंक देना है,

और यह यह जानना है कि नश्वर संसार से कूच कर चुके सभी प्रिय लोग तुम्हारे सामने हैं तथा तुम्हें देख रहे हैं।

जैसे कोई नींद में बोलता है, वैसे ही प्रायः मैंने तुम लोगों को यह कहते हुए सुना है, "संगमरमर तराशने वाला, तथा पत्थर में अपनी आत्मा की छवि खोजने वाला व्यक्ति मिट्टी जोतने वाले आदमी से उच्च है।

"और वह, जो इन्द्रधनुष को समा कर उसे मानव की छवि में कपड़े पर उतार दे, वह हमारे पैरों के चप्पल बनाने वाले से बड़ा आदमी है।"

परंतु मैं, नींद की अवस्था में नहीं अपितु मध्याह्न की पूर्ण जागरूकता की स्थिति में, यह कहता हूँ कि पवन विशाल शाहबलूतों से घास के तृण की तुलना में अधिक मधुर अंदाज में बात नहीं करता है।

और केवल वही महान है जो अपने प्यार से पवन की

ध्वनि को गीत में परिणत करता है।

काम मुहब्बत का दृष्टिगोचर रूप है।

यदि तुम प्रेम से नहीं अपितु केवल रुचिहीनता से ही काम कर सकते हो, तो तुम्हारे लिए उत्तम यही होगा कि तुम काम छोड़ कर किसी मंदिर के द्वार पर बैठो, तथा प्रसन्नता से काम करने वालों से दान प्राप्त करो।

क्योंकि यदि तुम उपेक्षा से रोटी पकाते हो, तुम्हारी रोटी कड़वी होगी, जिससे मात्र आधे व्यक्ति की भूख मिट सकती है।

तथा यदि तुम अनिच्छापूर्वक अंगूर का रस निकालो गे, तो तुम्हारी अनिच्छा मदिरा में विष आसवन कर देगी।

और यद्यपि तुम स्वर्गदूतों के से स्वर में भी गाते हो, किंतु गाने से तुम्हें प्रेम नहीं है, तो तुम लोगों के कर्णों को रात एवं दिन की ध्वनियों से ढाँप देते हो।

सुख और व्यथा

तब एक श्रीमती ने कहा, हमें सुख और दुख के बारे में बताइये।

तो उसने जवाब दिया :

तुम्हारी खुशी तुम्हारी मुखौटा-रिक्त हुई व्यथा है।

तथा बिल्कुल वही कुआँ, जहाँ से तुम्हारी हँसी उच्च होती है, प्रायः तुम्हारे अश्रुओं से प्लावित हुआ था।

इसके अतिरिक्त और हो भी क्या सकता है?

तुम्हारे अस्तित्व में व्यथा जितनी अधिक गहरी जगह तराशती है, उतनी ही अधिक खुशी तुम्हारे अंदर समा सकती है।

वह गिलास, जिस में तुम्हारी मदिरा है, क्या वह वही प्याला नहीं है जो कुम्हार की भट्टी में जलाया गया था?

तुम्हारी आत्मा को संतोष देने वाली वीणा क्या वही नहीं है जिसे छुरियों से खोखला किया गया था?

जब तुम आनन्दित होते हो, तो अपने हृदय की गहराई में झाँको, तुम्हें बोध होगा कि जिसने तुम्हें दु:ख दिया था वही तुम्हें खुशी भी प्रदान कर रहा है।

जब तुम दु:खी होते हो, तो अपने हृदय में फिर से देखो, तो तुम्हें प्रकट होगा कि तुम वास्तव में उसी वस्तु के लिए रो रहे हो जो तुम्हारी खुशी हुआ करती थी।

तुम में से कुछ लोग कहते हैं, “खुशी, दुःख से अधिक विशाल है।” जबकि दूसरों का कहना है, “नहीं, व्यथा अधिक व्यापक है।”

परंतु मैं तुम से कहता हूँ कि खुशी एवं व्यथा अवियोज्य हैं।

वह साथ साथ आते हैं, और जब उनमें से कोई एक तुम्हारे साथ भोजन-टेबल पर बैठा होता है तो याद रखो कि दूसरा तुम्हारी शय्या पर सोया हुआ है।

सचमुच तुम अपनी खुशी तथा व्यथा के बीच तराज़ू के पलड़े की तरह झूलते रहते हो।

तुम खाली होने की स्थिति में ही केवल स्थिर तथा संतुलित हो सकते हो।

अपने सोने तथा चांदी का तौल करने के लिए जब कोषाध्यक्ष तुम्हें कसौटी पर रखता है तो तुम्हारी खुशियाँ तथा व्यथाएँ अपरिहार्य रूप से उतार चढ़ाव की चपेट में पड़ जातीं हैं।

मकान

तब एक राजगीर सामने आया तथा कह उठा, हमें मकानों के बारे में बताइये ।

तथा उसने जवाब दिया :

शहर के प्राचीर में एक मकान निर्माण करने से पूर्व तुम अनकन्टार में अपनी अवधारणाओं का एक कुंज बनाओ ।

क्योंकि जिस तरह से तुम साँझ में घर लौटते हो, उसी तरह से तुम्हारे अंदर आविसित घुमक्कड़ दूरस्थ तथा अकेला रहता है ।

तुम्हारा मकान तुम्हारा अधिक विशाल शरीर है ।

यह धूप में परवान चढ़ता है तथा रात की नीरवता में सोया करता है, तथा यह बे-स्वप्न भी नहीं है ।

क्या तुम्हारा मकान स्वप्न नहीं देखता? और शहर छोड़ कर पेड़ों के किसी झुंड़ में अथवा किसी पहाड़ी की चोटी पर जाने का सपना नहीं देखता है?

काश ऐसा होने पाता कि मैं तुम्हारे घर अपने हाथ में इकट्ठा कर के उन्हें बीज बोने वाले की तरह जंगलों तथा चरागाहों में बिखेर देने पाता ।

काश ऐसा होता कि वादियाँ तुम्हारी सड़कें होतीं, हरेभरे रास्ते तुम्हारी गलियां, ताकि तुम एक दूसरे को अंगूर के बागों में खोजते, तथा वस्त्रों में पृथ्वी की सुगंध

लेकर आते। किंतु ऐसा अभी संभव नहीं है।

भय में गिरफ्तार तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हें एक दूसरे के अत्यधिक निकट ढेर कर दिया। तथा वह भय कुछ अतिरिक्त अवधि के लिए विद्यमान रहेगा। थोड़ी देर और तुम्हारे शहर की दीवारें तुम्हारे चूल्हों को तुम्हारे खेतों से अलग रखेंगी।

और मुझे बताओ ए अनाथा प्रदेश के निवासियो! इन मकानों में तुम्हारा क्या है? तथा तुम बलशाली रूप में बंद किए दरवाजों से किस चीज की रखवाले रहे हो?

क्या तुम्हें शांति उपलब्ध है; वह मौन अभिलाषा जो तुम्हारी शक्ति प्रकट करती है?

क्या वहाँ तुम्हारी स्मृतियाँ, अर्थात् वह झिलमिल झिलमिल करते मेहराब, हैं जो मस्तिष्क की शिखरों तक विस्तृत हैं?

वहाँ तुम्हारी सुंदरता है जो लकड़ी तथा पत्थर की बनी हुई चीजों से दूर करके मानव को पवित्र पर्वत की ओर मार्गदर्शन करती है?

मुझे बताओ, क्या यह वस्तुएँ तुम्हारे घरों में मौजूद हैं?

या तुम्हारे पास केवल आराम वा आराम की असीम वासना है; वह अप्रकट वस्तु, जो एक अतिथि के रूप में प्रवेश होती है, फिर आतिथेय तथा फिर स्वामी बन बैठती है?

अरे हाँ, यह पालतू बनाने वाली बन जाती है, तथा

काँटे तथा चाबुक से तुम्हारी बड़ी इच्छाओं की कठपुतली बना लेती है।

यद्यपि कि उसके हाथ रेशमी हैं, परंतु उसका हृदय लोहे का है।

यह तुम्हें लोरी सुना कर सुला देती है ताकि वह तुम्हारी शय्या के पास बैठकर शरीर की पवित्रता का उपहास कर सके।

यह तुम्हारी ठोस भावनाओं एवं इन्द्रियों का उपहास करती है तथा उन्हें कमज़ोर बर्तनों की तरह टुकड़े टुकड़े करती है।

निसंदेह आराम की लिप्सा आत्मा के उत्साह की हत्या करती है, और फिर शव-यात्रा में तिरस्कार से हँसते हँसते चलती है।

परंतु तुम, हे वातावरण के बच्चो, आराम में बेचैन रहने वालो, तुम न तो उसके जाल में फँसोगे, न ही उसके पालतू बनोगे।

तुम्हारा घर लंगर नहीं अपितु मस्तूल होगा।

यह एक चमकती हुई झिल्ली न होगी जो घाव ढ़ांकती है अपितु नयनों की रक्षा करने वाला एक पपोटा होगा।

दरवाजे से गुज़र सकने के लिए तुम अपने पंख समेटो गे नहीं, न ही किसी छत से टक्कर लग जाने के भय से अपने सिरों को झुकावोगे, तथा न साँस लेने में तुम्हें ड़र होगा कि कहीं दीवारों में दरारें न पड़ जाएं एवं वे गिर न जाएं। तुम उन मकबरों में नहीं रहोगे जिन्हें मृतकों

ने जीवंत लोगों के लिए बनाया है।

तुम्हारा मकान शानदार एवं वैभवशाली ही क्यों न हो, वह न तो तुम्हारे रहस्यों को संभाल कर रखेगा, न ही तुम्हारी अभिलाषाओं को शरण दे सकेगा।

क्योंकि जो चीज़ तुम्हारे अंदर अपार है, वह आकाश के भवन में बसेरा करती है, जिसका द्वार प्रभात का कोहरा तथा जिसकी खिड़कियाँ निशा के गीत तथा सन्नाटे हैं।

परिधान

फिर एक जुलाहे ने कहा कि हमें कपड़ों के संदर्भ में बताओ।

तो उसने उत्तर दिया :

तुम्हारे कपड़े तुम्हारी बहुत सारी सुंदरता तो छुपा देते हैं किंतु वह असुंदर नहीं छुपाते हैं।

तथा यद्यपि तुम वस्त्रों द्वारा अपनी गोपनीयता की स्वतंत्रता के खोजकर्ता हो, परंतु तुम उनमें एक काठी तथा लगाम पा सकते हो।

काश ऐसा होता है कि तुम धूप तथा वायु की लहरों के साथ अधिकतर त्वचा और कमतर परिधान के साथ संमुख हो सकते!

क्योंकि जीवन की साँस आदित्य के प्रकाश में है तथा जीवन का हाथ पवन के झोंकों में है।

तुम में से कुछ लोग कहते हैं, "जो कपड़े हम पहनते हैं, उन्हें उत्तर का समीर बुनता है।"

और मैं कहता हूँ, हाँ, यह उत्तर का समीर ही था,

परंतु लज्जा इसकी ताँत थी और स्नायुओं की कोमलता उसका धागा था।

तथा जब उसका कार्य पूरा हुआ, तो वह वन में खिलखिला कर हँसा।

यह मत भूलो कि अस्वच्छ की आँख से सुरक्षा के लिए विनयशीलता एक ढ़ाल है।

तथा जब अस्वच्छ विनाश हो जाएगा, तो विनयशीलता एक बाधा तथा विवेक को मूर्ख बनाने के अतिरिक्त कुछ और क्या प्रमाणित होगी?

मत भूलो कि पृथ्वी तुम्हारे नंगे पाँव महसूस करने से प्रहर्षित होती है तथा हवाओं के झोंके तुम्हारी जटाओं से खेलने के दीर्घकालिक अभिलाषी हैं।

क्रय विक्रय

उसके पश्चात् एक व्यापारी ने कहा, हमें क्रय विक्रय के संबंध में बताइये।

तो उसने जवाब में कहा :

तुम्हें धरती अपने फल प्रदान करती है, तथा तुम्हें कोई अभाव न होगा यदि तुम्हें इतना सा ज्ञान एवं सभ्यता हो कि अपने हाथ कैसे भरने चाहियें।

भूमि के उपहारों का आपस में आदान प्रदान करने में ही तुम प्रचुरता पाओगे तथा तृप्ति प्राप्त करोगे।

इसके बावजूद भी, यदि विनिमय प्रेम तथा कृपालु न्याय द्वारा संचालित न हो तो इससे कुछ लोग लालसा तथा अन्य लोग भूख की ओर अग्रसर होंगे।

समुद्र, खेतों तथा द्राक्षा के उद्यानों में परिश्रम करने वाले, तुम लोग, जब बाजार में जुलाहों, कमहारों तथा मसाले इकट्ठा करने वालों से मिलो,

तो धरती की उच्चतम आत्मा को अपने बीच आने की विनती करो, तथा अपने तराज़ू के पलड़ों एवं हिसाब किताब को शुद्ध कराओ, ताकि मूल्य का तौल मूल्य से हो।

तथा अपने लेनदेन में उस खाली हाथ व्यक्ति को स्थान न दो जो तुम्हारे परिश्रम के बदले अपने शब्द बेचना चाहता हो।

ऐसे व्यक्तियों से तुम्हें यह कहना चाहिए :

"या तो तुम हमारे साथ खेतों में आओ, या हमारे भाइयों के साथ समुद्र जा कर जाल फेंको ।

"क्योंकि पृथ्वी तथा समुद्र जिस तरह हम पर कृपालु हैं, वैसे ही वह तुम पर कृपालु होंगे ।"

यदि गायक, नर्तक या बाँसुरी-वादक वहाँ आयें तो उनके उपहार भी खरीद लो ।

क्योंकि वह भी फलों तथा सुगंधित लोबान एकत्र करने वाले हैं, तथा जो चाज़ें वह ले आते हैं, यद्यपि वह सपनों से रचना की गयी हैं, परंतु वह तुम्हारी आत्माओं के परिधान एवं आहार हैं ।

स्मरण रहे कि बाज़ार-स्थल छोड़ने से पूर्व, यह देख लेना कि कोई अपनी पथ पर खाली हाथ ले कर तो नहीं लौट रहा है ।

क्योंकि जब तक तुम में से न्यूनतम व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी नहीं हो जातीं, धरती की उच्च आत्मा पवन के झोंकों पर शांति से नहीं सोएगी ।

अपराध तथा दण्ड़

तब शहर का एक न्यायाधीश आगे आया और कहा, हमें अपराध तथा दण्ड़ के विषय में बताओ।

तथा उसने जवाब दिया :

जब तुम्हारी आत्मा हवा के झोंकों पर आवारा घूमती है,

तो तुम, अकेले तथा असावधान, अन्य लोगों के विरुद्ध अपराध करते हो, तथा उस रूप में अपने खिलाफ भी अपराध करने के दोषी होते हो।

और वह अपराध करने के कारण तुम्हें धन्य के द्वार पर कुछ समय तक कोई ध्यान न पाए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

तुम्हारा पवित्र अस्तित्व एक सागर की तरह है;

यह सदैव अवमाननाहीन रहता है।

तथा ईथर या अंतरिक्ष के समान यह केवल पंख वालों को उड़ान प्रदान करता है।

तुम्हारा पवित्र अस्तित्व दिवाकर के समान भी है;

यह छछूँदर के मार्ग से परिचित नहीं है तथा सर्पों की बिलों का खोजकर्ता भी नहीं होता है।

परंतु तुम्हारा पवित्र अस्तित्व तुम्हारे सत्व में अकेले नहीं रहता है।

तुम्हारा बहुत कुछ अभी भी इंसान है तथा तुम्हारा

बहुत कुछ अभी इंसान नहीं हुआ है,

बल्कि वह एक निराकार असभ्य है जो अपनी जागरूकता की तलाश में कोहरे में निद्राचारी है ।

और मैं तुम्हारे भीतर विद्यमान मनुष्य की ही कहूँगा ।

क्योंकि यही वह व्यक्ति है, जो न तो तुम्हारा पवित्र अस्तित्व और न ही कोहरे में अग्रसर असभ्य है, परंतु यही अपराध तथा अपराध के दण्ड़ से परिचित है ।

प्रायः मैं ने तुम्हें दोषी के बारे में ऐसे बातें करते सुना है जैसे कि वह तुम में से एक नहीं, बल्कि तुम्हारे लिए अज्ञात तथा तुम्हारे संसार में बिना अनुमति घुस आने वाला हो ।

परंतु मैं कहना है कि जैसे कोई पवित्र तथा सदाचारी इंसान उस पराकाष्ठा से ऊपर नहीं उठ सकता, जो तुम में से प्रत्येक में आवासित है,

उसी तरह से कोई दुष्ट तथा कमज़ोर व्यक्ति उस सबसे अपमानजनक सीमा से नीचे नहीं गिर सकता है, जो तुम में भी विद्यमान है ।

जैसे किसी वृक्ष का कोई भी पता सारे वृक्ष की गुप्त जागरूकता के बिना पीतराग नहीं होता है,

वैसे ही कोई दुष्ट तुम सब की गुप्त सहमति के बिना अपराध नहीं कर सकता है ।

एक जुलूस की तरह तुम अपने पवित्र अस्तित्व की ओर इकट्ठे चलते हो ।

तुम ही पथ हो, तुम ही पथिक भी ।

तथा जब कोई पथिक गिर जाता है, वह उसके पीछे चलने वालों की खातिर गिर जाता है, कि वह ठोकर खिलाने वाले, रास्ते में पड़े पत्थर का ध्यान रखें।

अरे हाँ, वह उससे पहले आगे निकल कर जाने वाले लोगों की खातिर भी गिरता है, जो बहुत तेजी से तथा दृढ़ कदम वाले होते हुए भी ठोकर दिलाने वाले पत्थर को हटाने में असमर्थ रहे।

इसके अतिरिक्त, यद्यपि शब्द तुम्हारे हृदयों के लिए सहनशील न भी हों :

हत व्यक्ति स्वयं अपनी हत्या के लिए अनुत्तरदायी नहीं है,

तथा लुटा हुआ व्यक्ति अपने लुटे जाने के आरोप से मुक्त नहीं है।

सदाचारी व्यक्ति दुष्ट मनुष्य के कार्यों से निर्दोष नहीं है,

तथा गंभीर अपराधी के कर्मों से कोई श्वेत हात वाला स्वच्छ नहीं है।

हाँ, अपराधी प्रायः घायल हुए व्यक्ति द्वारा पीड़ित होता है।

इससे भी अधिक बार, दण्डित व्यक्ति निर्दोषों तथा आरोपमुक्त व्यक्तियों का बोझ उठाने वाला होता है।

तुम न्याय-प्रेमी को न्याय-भंजक से तथा सदाचारी को दुष्ट से पृथक् नहीं कर सकते,

क्योंकि वे अंशुमाली के मुखमंड़ल के सामने साथ-

साथ होते हैं, जैसे काला तथा सफेद धागा साथ-साथ बुने जाते हैं।

तथा जब काला धागा टूट जाता है तो जुलाहा पूरे कपड़े को देखेगा तथा करघे का भी निरीक्षण करेगा।

यदि तुम में से कोई किसी विश्वासघाती पत्नी को न्याय के कठघरे में खड़ा करना चाहता है,

तो उसे उस महिला के पति के हृदय को भी पलड़े में रखना चाहिए तथा उसकी आत्मा को भी नापना चाहिए।

तथा जो अपराधी को कोड़े मारना चाहता है, उसे अपराध का शिकार बने व्यक्ति की भावना को भी देखना चाहिए।

तथा यदि तुम में से कोई सदाचारिता के नाम पर दण्ड़ जारी करना चाहता है तथा दुष्ट वृक्ष पर कुल्हाड़ी मारना चाहता है, तो उसे उसकी जड़ों को भी देखना चाहिए;

और निस्संदेह वह अच्छे एवं खराब, फलदार एवं समरहीन, सब चीज़ों को भूमि के मौन हृदय में आपस में गुथा हुआ पाएगा।

तथा तुम, ऐ श्रीमान् न्यायमूर्तियो ! जो न्यायसंगत होने के अभिलाषी हैं।

तुम उस व्यक्ति पर क्या निर्णय दोगे जो शारीरिक रूप में तो ईमानदार है किंतु आत्मा से एक चोर है?

तुम उस आदमी पर क्या जुर्माना लगाओ गे जो प्रकटन में तो हत्यारा है परंतु स्वयं आत्मा से वधित है?

तुम उस व्यक्ति पर कैसे अभियोग चलावो गे जो व्यवहार में धोखेबाज़ तथा अत्याचारी है,

परंतु इसके बावजूद, जो व्यथित एवं उत्पीड़ित भी है?

और उन्हें तुम कैसे दण्ड़ दोगे जिनका पश्चाताप पहले ही उनकी दुष्कर्म से अधिक हो चुका है?

क्या पश्चाताप वह न्याय नहीं है जो उसी विधि के माध्यम से प्रशासित होता है जिसे तुम प्रसन्नता से पालन करना चाते हो?

फिर भी तुम पश्चाताप की अनुभूति को न निर्दोष के हृदय में डाल सकोगे, न अपराधी के हृदय से निकाल सकोगे ।

पश्चाताप की अनुभूति रात के समय में बिना बुलाए पुकार उठेगी कि मनुष्य जागरूक हों तथा अपने आप को ध्यान से देखें ।

तथा तुम, हे न्याय समझने के अभिलाषी सज्जनो, तुम न्याय कैसे समझोगे यदि तुम पूर्ण प्रकाश में सभी कामों को नहीं देखोगे?

ऐसा करने के पश्चात् ही तुम इसका बोध कर सकोगे कि खड़ा तथा गिरा हुआ व्यक्ति वास्तव में एक ही आदमी है जो अपने असभ्य स्वयं की रात तथा पवित्र-स्वयं के दिन के बीच गोधूली में खड़ा है,

तथा यह कि किसी मंदिर के कोने की शिला उसके आधार में रखे सब से निचले पत्थर से ऊँची नहीं है ।

नियम

तब एक अधिवक्ता ने पूछा, हज़रत ! हमारे नियमों के विषय में तुम्हारा क्या मत है?

तथा उसने जवाब दिया :

तुम नियम बनाने में प्रसन्नता व्यक्त करते हो,

मगर तुम्हें उन्हें तोड़ने में अधिक प्रसन्नता होती हो ।

समुद्र तट पर खेलने वाले बच्चों के समान, जो परिश्रम से रेणुका का मीनार निर्माण करते हैं तथा फिर उन्हें हँसते हँसते विध्वंस कर देते हैं ।

तब भी जब तुम रेत के मीनार बना रहे होते हो, सागर तट पर अधिक बालुका ले आता है,

तथा जब तुम उन्हें नष्ट करते हो, समुद्र भी तुम्हारे साथ हँसता है ।

वास्तव में सागर सदैव भोले-भालों के साथ हँसता है ।

परंतु उन लोगों की क्या बात करें जिनके विवेक अनुसार जीवन एक महासागर नहीं है, और न ही मनुष्यों द्वारा रचित नियम रेत के मीनार हैं?

अपितु जिनके लिए जीवन एक चट्टान है, तथा कानून एक छेनी, जिसके द्वारा वे जीवन को अपने अपने आकार अनुसार तराशना चाहते हैं?

उस पाँव से अशक्त का क्या वर्णन हो, जो नर्तकों से

घृणा करता है?

उस वृषभ की क्या बात करें जो अपने जुए से प्रेम-आसक्त हो तथा वनों के बारहसिंघाओं एवं हरिणों को भटके तथा आवारा मानता हो?

उस वृद्ध सर्प का क्या ब्यौरा प्रस्तुत किया जाए, जिसका अपना केंचुल उतर नहीं सकता है और जो सभी अन्य साँपों को नग्न एवं निर्लज्ज घोषित करता है?

जो विवाह के प्रीतिभोज में शीघ्र आता है, तथा अत्यधिक खा कर जब ऊब जाता है तो यह कहते हुए अपना रास्ता नापता है कि सभी आमंत्रण शिष्टाचार का उल्लंघन हैं तथा उनमें शामिल सभी लोग नियम-भंजक?

उन सभी के विषय में मैं सिवाय इसके और क्या कहूँ कि यह भी धूप में खड़े हैं, किंतु सूरज की तरफ़ पीठ करके?

वे केवल अपनी छाया देखते हैं, तथा यही छायायें उनके कानून हैं।

तथा उनके बोध में दिवाकर क्या चीज़ है, एक छाया-निर्माता होने के अतिरिक्त?

तथा नियमों को स्वीकार करना झुककर भूमि पर अपना साया खोजने के सिवा क्या है?

परंतु तुम, हे अंशुमाली की ओर अपनी मुखाकृति करके चलने वालो! ज़मीन पर खींचे हुई कौन से चित्र तुम्हें रोक सकेंगे?

तुम, हे प्रचण्ड़ वायु के साथ यात्रा करने वालो! कौन

सा वात-दिग्दर्शक तुम्हारी पथ का निर्धारण करेगा?

यदि तुम अपना जुआ तोड़ डालो गे परंतु किसी व्यक्ति के कारागार के द्वार पर नहीं, तो किस आदमी का कौन सा कानून तुम्हें बांधेगा?

तुम्हें किन नियमों का भय होगा, यदि तुम नृत्य करो, किंतु किसी मानव की लौह-जंजीर से न टकराते हुए?

कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो तुम्हें न्याय के कठघरे में खड़ा करेगा, यदि तुम अपने वस्त्र फाड़ोगे, परंतु किसी के रास्ते पर नहीं फेंकोगे?

अनाथा प्रदेश के निवासियो ! तुम ढोल को लपेट कर रख सकते हो, तुम वीणा के तारों को ढीला कर सकते हो, परंतु चातक पक्षी को गायन न करने का आदेश कौन दे सकता है?

स्वतंत्रता

तब एक सुवक्ता ने अनुरोध किया, हम को स्वतंत्रता के विषय में बताइये।

तथा उसने जवाब दिया :

नगर के द्वार पर तथा अपनी अग्नि इर्द गिर्द बैठे तुम लोगों को मैंने साष्टांग प्रणाम में अपनी स्वतंत्रता की वंदना करते देखा है,

बिल्कुल वैसे ही जैसे दासगण अत्याचारी के समक्ष विनम्रता व्यक्त करते तथा उसकी सराहना करते हैं, यद्यपि वह उनका वध करता है।

अरे हाँ, मंदिर के कुञ्ज में तथा दुर्ग की छाया में, तुम में से स्वतंत्रतम व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता जुए तथा हथकड़ी के समान पहने मैंने देखा है।

तथा मेरा हृदय मेरे भीतर लहू-लुहान हुआ; क्योंकि तुम तभी स्वाधीन हो सकते हो, जब स्वतंत्रता की कामना तक भी तुम्हारे लिए काठी बन जाए और जब तुम स्वाधीनता को एक लक्ष्य एवं परिपूर्ति कहना छोड़ दोगे।

तुम निस्संदेह मुक्त हो जाओगे, जब तुम्हारे दिन ध्यान से मुक्त न हों, तथा न तुम्हारी रातें आवश्यकता एवं संताप से रिक्त हों।

अपितु जब यह चीज़े तुम्हारे जीवन को लपेट लें और फिर भी तुम नग्न एवं बंधनों से मुक्त होकर उनके ऊपर

उठ जाओगे।

तथा जिन्हें तुमने अपने बोध के प्रभात के समय में अपने मध्याह्न के क्षण के इर्द-गिर्द बांध लिया है, उन बेड़ियों को तोड़े बिना तुम अपने दिन तथा अपनी रातों के ऊपर कैसे उठ सकोगे?

यथार्थ में, जिसे तुम स्वतंत्रता कहते हो, वह उनमें सर्वाधिक शक्तिशाली श्रृंखला है, यद्यपि उसकी कड़ियां धूप में जगमगाती हैं तथा तुम्हारी आँखों को तिरमिरातीं हैं।

स्वयं अपने ही अस्तित्व के टुकड़ों के बिना कौन सी वह वस्तु है जिसे तुम स्वतंत्रता के लिए त्याग दोगे?

यदि यह कोई अनुचित नियम है जिसे तुम समाप्त करोगे, तो वह कानून तुम्हारे मस्तिष्क पर तुम्हारे अपने ही हाथों से लिखा गया था।

अपनी कानून की पुस्तकें जला कर तुम इसे मिटा न सकोगे, न ही अपने न्यायमूर्तियों के ललाट धोने से उसे तुम मिटा पाओगे, चाहे तुम सागर का सारा पानी भी उन पर डालो।

और यदि यह कोई स्वेच्छाचारी शासक है जिसे तुम अपदस्थ करना चाहते हो, तो पहले तुम्हारे भीतर निर्मित उसका सिंहासन नष्ट करना सुनिश्चित बनाओ।

क्योंकि स्वतंत्र तथा आत्माभिमानयुक्त मनुष्यों पर कोई अत्याचारी इसके सिवा कैसे शासन कर सकता है कि उनकी अपनी स्वतंत्रता शोषण व दमन तथा उनका

अपना आत्माभिमान अभिशाप पर आधारित है।

और अगर यह कोई चिंता है जिसे तुम फेंकना चाहते हो, तो यह चिंता तुम पर थोपी जाने के बजाय तुमने स्वयं चुन ली थी।

तथा यदि यह कोई त्रास है जिसे तुम दूर करना चाहते हो, तो उस त्रास का आसन तुम्हारे हृदय में है न कि भयानक वस्तु के हाथ में।

वांछित वा भयावह, घिनौना वा प्रिय, अनुसरणात्मक वा पृथकीय सभी चीज़ें वस्तुतः तुम्हारे अस्तित्व में निरन्तर अर्द्ध-आलिंगन में घूमती फिरती हैं।

रोशनियों तथा छायाओं की परस्पर लिपटी हुई जोड़ियों की तरह यह चीज़ें तुम्हारे अंदर गतिशील हैं।

तथा जब साया ढ़ल जाता है तथा गायब हो जाता है, तो शेष रहने वाली रोशनी किसी अन्य प्रकाश की छाया बन जाती है।

तथा इस प्रकार तुम्हारी स्वतंत्रता जब अपनी बेड़ियाँ खो देती है तो वह स्वयं एक बड़ी स्वतंत्रता की बेड़ी बन जाती है।

बुद्धि एवं भावना

तब पुनः एक बार पुजारिन बोलीं और कहा :
हमें बुद्धि और भावना के विषय में बताओ।

और उसने यह कहते हुए उत्तर दिया :

तुम्हारी आत्मा प्रायः एक रणभूमि है जहाँ तुम्हारा विवेक एवं न्याय तुम्हारी लालसा एवं इच्छा से युद्धारत होते हैं।

काश कि मैं तुम्हारी आत्मा में शांति स्थापित करने वाला होता तो मैं तुम्हारे तत्वों की फूट एवं शत्रुता को एकता तथा मधुर गान में परिणत कर सकता।

परंतु मैं ऐसा कैसे हो पाऊँगा, जब तक कि तुम स्वयं भी शांति-स्थापक ही नहीं अपितु अपने सभी तत्वों से प्रेम करने वाले हो जाओगे?

तुम्हारी बुद्धि एवं भावना समुद्र की यात्रा पर निकली तुम्हारी आत्मा के पतवार तथा पाल हैं।

अगर तुम्हारे पतवार अथवा पाल में से कोई भी टूट या फट जाए तो तुम केवल लहरों की चपेट में पड़ कर बह सकते हो या फिर मध्य समुद्र में निलंबित रखे जा सकते हो।

क्योंकि जब बुद्धि अकेली शासक हो, तो वह सीमित करने वाली एक शक्ति होती है; और भावना यदि निगरानी के बिना हो, तो वह एक लौ है जो स्वयं ही नष्ट होने तक जल जाती है।

इसलिए अपनी आत्मा को अनुमति दो कि वह विवेक को भावना की पराकाष्ठा तक उच्च करे, ताकि वह गायनमग्न हो सके;

तथा उसे प्रज्ञा के साथ तुम्हारे मनोभाव का मार्गदर्शन करने दो, ताकि तुम्हारा मनोभाव अपने दैनिक पुनरुत्थान से जीवन्त रहे तथा अमरपक्षी की तरह अपने स्वयं के भस्म से उठ खड़ा हो ।

मैं चाहता हूँ कि तुम अपने निर्णय तथा इच्छा को घर में आए दो प्रिय अतिथियों की तरह समझो ।

निश्चित रूप से तुम एक अतिथि को दूसरे पर प्राथमिकता नहीं दोगे, क्योंकि जो किसी एक का अधिक ध्यान रखेगा वह दोनों के प्रेम तथा विश्वास से वंचित होगा ।

पहाड़ियों में, दूर के खेतों तथा चरागाहों के चैन एवं प्रशांति में गुल-मिल होते हुए, जब तुम पहाड़ी-पीपल की ठंडी छाँव तले बैठते हो, तब अपने हृदय में मौनता से कहने दो, “परमेश्वर बुद्धि में विश्राम करता है ।”

तथा जब तूफान आता है, तथा शक्तिशाली आँधी वन को हिला कर रख देती है, और मेघ की गरजना तथा बिजली की कड़क आकाश के वैभव की घोषणा करते हैं, तो अपने हृदय को विस्मय की अवस्था में कहने दो, “परमेश्वर भावावेश में गतिशील होता है ।”

और चूँकि तुम परमेश्वर के क्षेत्र में एक साँस हो, तथा परमेश्वर के जंगल में एक पत्ता हो, तुम्हें भी बुद्धि में विश्राम तथा भावना में हरकत करनी चाहिए ।

दर्द

तब एक महिला बोली, हमें दर्द की बात सुनाव ।

और उसने कहा :

तुम्हारी वेदना उस घोंघे का टूटना है जिसने तुम्हारे बोध को घेरा हुआ है ।

जिस तरह किसी फल की गठली का फूटना आवश्यक है, ताकि उसका हृदय धूप में खड़ा हो सके, उसी तरह से तुम्हें भी दर्द से ज्ञात होना होगा ।

तथा अपने जीवन के दैनिक चमत्कारों से यदि तुम अपने हृदय को आश्चर्यमग्न रख पाते, तो तुम्हारी व्यथा तुम्हारे आमोद से कम आश्चर्यजनक नहीं लगता;

तब तुम अपने हृदय के मौसम को स्वीकार करते, बिल्कुल वैसे ही जैसे तुम ने सदा अपने खेतों पर यात्रारत मौसमों को स्वीकार किया है ।

तथा तुम शांतचित्त के साथ अपने दु:ख के शीत-ऋतुओं को देखते ।

तुम्हारे अधिकतर दर्द स्वयं चयनित होते हैं ।

तुम्हारे भीतर विराजमान वैद्य तुम्हारे रोगी स्वयं का उपचार कड़वी औषधि से करता है ।

इसलिए चिकित्सक पर विश्वास करो तथा उसकी दी हुई दवा मौनता एवं शांति से पी लो ।

क्योंकि उसका हाथ, भारी तथा कठोर होने के बावजूद, अदृश्य सत्ता के कोमल हाथ से मार्गदर्शन पाता है ।

तथा वह जिस कटोरे को तुम्हें प्रदान करता है, यद्यपि वह तुम्हारे होठों को जला भी दे, वह उस मिट्टी से बना है, जिसे कुम्हार ने अपने पवित्र आँसूओं से गीला किया है ।

आत्मज्ञान

तब एक आदमी ने कहा, हम से आत्मज्ञान की बात करो।

तो उसने जवाब दिया :
तुम्हारे हृदय अहर्निश के रहस्यों का ज्ञान मौनत्व से रखते हैं।
परंतु तुम्हारे कर्ण तुम्हारे हृदय के ज्ञान के स्वर प्रति तृष्णारत हैं।
जो तुमने सदैव विचार में जाना है उसे तुम शब्दों में जानना चाहते हो।
तुम अपने सपनों के नग्न शरीर को अपनी उँगलियों से छूना चाहते हो।

यह ठीक है, तुम्हें ऐसा करना चाहिए।
तुम्हारी आत्मा के गुप्त, कूप-रूपी उत्स को निकलकर महासागर की ओर सरसराते हुए प्रवाहरत होना होगा;
तथा तुम्हारी अथाह गहरायियों का ख़ज़ाना तुम्हारी आँखों पर प्रकट हो जाएगा।
परंतु अपने अज्ञात खज़ाने का तौल करने लिए कोई तराज़ू न हो;
तथा अपने ज्ञान की गहराई का मापन किसी मानदंड़ अथवा स्वर-यन्त्र से न करो।
क्योंकि अस्मिता एक अथाह एवं असीम महासागर

है।

यह मत कहो कि “मैंने सत्य पा लिया है” परंतु यह कहो कि “मुझे एक सत्य पता चला है।”

यह मत कहो कि “मैं ने आत्मा का रास्ता खोज लिया है।” बल्कि कहो कि “राह पर चलते हुए मेरी आत्मा से मुलाकात हुई।”

क्योंकि आत्मा सभी मार्गों पर चलती है।

आत्मा एक रेखा पर नहीं चलती, न ही यह सरकंड़े के तरह बढ़ती है।

आत्मा स्वयं खिलती है, अनगिनत पंखुड़ियों वाले उत्पल की तरह।

शिक्षा

फिर एक शिक्षक ने कहा, हमें शिक्षा के विषय में कहिए।

तथा उसने जवाब दिया :

तुम्हारे ज्ञान की प्रभात में जो पहले से अर्द्ध-स्वप्नरत है, उसके सिवा कोई भी व्यक्ति तुम्हें कुछ और नहीं प्रदर्शित कर सकता है।

जो शिक्षक अपने अनुयायियों के बीच मंदिर की छाँह में चलता है वह अपनी बुद्धिमत्ता से नहीं अपितु अपने विश्वास तथा अपने प्रेम-भाव से प्रदान करता है।

अगर वह सचमुच बुद्धिमान् है तो अपनी बुद्धिमानी के घर में प्रवेश करने के लिए वह तुम पर ज़ोर नहीं करता है, परंतु वह तुम्हारे अपने मन की दहलीज़ की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करता है।

खगोलज्ञ तुम्हें अंतरिक्ष की अपनी समझ के विषय में बात कर सकता है, परंतु वह तुम्हें अपनी समझ नहीं प्रदान कर सकता।

संगीतकार तुम्हारे लिए सभी ब्रह्मांड में विद्यमान लय गा सकता है, परंतु वह तुम्हें वे कान प्रदान नहीं कर सकता, जो लय को समा सकें, न ही वह तुम्हें वह स्वर दे सकता है जो उस लय को दोहरा सके।

तथा जो अंकों के विज्ञान का विशेषज्ञ है वह तुम्हें तौल तथा मात्रा के क्षेत्रों के बारे में तो बता सकता है,

किंतु वह तुम्हें वहाँ ले नहीं जा सकता।

क्योंकि किसी आदमी की दृष्टि किसी अन्य व्यक्ति को अपने पंख उधार नहीं देती है।

तथा जिस तरह से तुम में से हर एक परमेश्वर के ज्ञान में अकेला है, उसी तरह से तुम में से हर किसी को परमेश्वर के बोध तथा पृथ्वी की समझ में अकेला होना चाहिए।

मित्रता

फिर एक युवक ने कहा, हम से मित्रता के बारे में बात कीजिए।

तथा उसने जवाब दिया :

तुम्हारा मित्र तुम्हारी पूरी हो चुकीं आवश्यकतायें है।

वह तुम्हारा खेत है जिसमें तुम प्यार से बीज बोते हो तथा आभार के साथ फसल काटते हो।

तथा वह तुम्हारा आवास एवं चूल्हा है।

क्योंकि जब तुम भूखे होते हो तो उसके पास आते हो; तथा संतोष प्राप्ति के लिए उसे खोजते हो।

जब तुम्हारा मित्र अपने भेद तुम्हें प्रकट करता है तो तुम्हें अपनी ओर से "नहीं" का भय नहीं होता, न ही तुम अपनी "हाँ" को रोक सकते हो।

तथा जब वह चुप होता है, तब भी तुम्हारा हृदय उसके दिल की आवाज़ सुनना बंद नहीं करता है।

क्योंकि मित्रता में सभी विचार, सभी इच्छायें, सभी आशाएँ बिना शब्दों के पैदा होतीं हैं तथा बेहद अद्‌भुत प्रसन्नता से संयुक्त हो जातीं हैं।

जब तुम अपने मित्र से विदा होते हो, तुम शोक नहीं करते हो;

क्योंकि उसका जो गुण तुम्हें प्रियतम है वह उसकी

अनुपस्थिति में अधिक स्पष्ट हो सकता है, जैसे मैदान से देखने पर पर्वतारोही को पर्वत अधिक साफ नज़र आता है।

तथा आत्मा की गहराई के सिवा दोस्ती में और कोई उद्देश्य कार्यरत न हो।

क्योंकि अपने रहस्य के प्रकटन के सिवा जो प्रेम किसी अन्य वस्तु का लिप्सारत हो, वह प्रेम नहीं बल्कि फेंका हुआ एक जाल है, और उसमें केवल लाभहीन ही फँसता है।

तथा अपनी सर्वोत्तम वस्तु को अपने मित्र को अर्पण कर दो।

यदि उसे तुम्हारे ज्वार के उतार को जानना ही है तो उसे अपने बाढ़ से भी अवगत होने दो।

क्योंकि, क्या तुम्हारा मित्र मात्र इसलिए है कि तुम अपनी खाली घड़ियाँ बिताने के लिए ही उसे खोजो?

उसे हमेशा जीवन जीने के लिए ढूँढो। क्योंकि तुम्हारी जरूरत पूरी करना उसका कर्तव्य है, परंतु तुम्हारा खालीपन भरना उसका दायित्व नहीं है।

तथा मित्रता की मिठास में हँसी तथा खुशियों को परस्पर होने दो।

क्योंकि छोटी छोटी चीजों की ओस में हृदय को प्रभात मिलती है और यह तरोताज़ा हो जाता है।

संवाद

फिर एक विद्वान ने कहा, हमें संवाद के संदर्भ में कहिये।

तथा उसने जवाब दिया :

तुम उस समय बातें करते हो जब तुम अपने विचारों के साथ शांत नहीं रह सकते हो;

तथा जब हृदय के एकांत में और अधिक समय वास करने की तुम्हारी क्षमता शेष नहीं रहती है, तो तुम होंठों में गुज़ारा करने लगते हो, तथा आवाज़ विचार का परिवर्तन एवं मनोरंजन होती है।

तथा तुम्हारी अधिकतर बातचीत में सोचविचार अर्द्ध-मृत हो जाता है।

क्योंकि सोच अंतरिक्ष में रहने वाला एक पक्षी है, जो शब्दों के पिंजरे में निस्सन्देह अपने पंख फैला सकता है, परंतु उड़ नहीं सकता।

तुम्हारे बीच कुछ ऐसे लोग हैं जो अकेले होने के ड़र से किसी बातूनी व्यक्ति की तलाश करते हैं।

तन्हाई का सन्नाटा उनकी आँखों के सामने उनके नंगे स्वयमों को प्रकट किए देता है तथा वह इससे बचना चाहते हैं।

तथा ऐसे लोग भी हैं जो बिना किसी ज्ञान या पूर्व-विचार के बात करते हैं तथा किसी ऐसी सच्चाई को उजागर कर देते हैं जो वे स्वयं भी नहीं समझते।

अपितु ऐसे लोग भी हैं जिनकी अन्तरात्माओं में सत्य आवासित है, परंतु वे उसे शब्दों में नहीं बतलाते।

ऐसे ही लोगों के हृदयों में, आत्मा मधुर धुन की मौनता में बसेरा करती है।

जब सड़क के किनारे या बाज़ार में अपने मित्र से तुम्हारी मुलाकात हो, तो अपनी आत्मा को तुम्हारे होठों की हरकत करने दो तथा तुम्हारी भाषा का मार्गदर्शन करने दो।

तुम्हारे स्वर भीतर के स्वर को उसके कान अंदर के कान से बातें करने दो;

क्योंकि उसकी आत्मा तुम्हारे हृदय के सत्य को संभाल के रखेगी जैसे कि मदिरा का स्वाद याद रखा जाता है।

जब रंग की स्मृति तथा सुराही बाकी नहीं रहते।

समय

तत्पश्चात् एक खगोलज्ञ ने कहा, महाशय, समय के संदर्भ में?

तो उसने उत्तर दिया :

तुम अपार एवं अगाध समय को नापना चाहते हो।

तुम अपने कार्य एवं अपनी आत्मा की उड़ान तक भी घड़ियों तथा ऋतुओं के अनुकूल करोगे!

तुम समय की एक धारा बनाओगे कि उस के तट पर बैठ कर उसकी प्रवाह को ध्यानपूर्वक देख सको!

तुम्हारे भीतर स्थित कालातीत, इसके बावजूद भी जीवन की शाश्वतता से अभिज्ञ है,

तथा उसे ज्ञात है कि बीता कल केवल आज की स्मृति है तथा आने वाला कल आजका एक स्वप्न है।

और यह कि तुम्हारे भीतर जो गायक तथा विचारक है, वह अभी भी आदि क्षण की परिसीमा का निवासी है जिस ने अंतरिक्ष में तारों को बिखेर दिया था।

तुम में से कौन यह अनुभूति नहीं करता है कि उसके अनुराग की शक्ति अपरम्पार है?

और फिर भी कौन महसूस नहीं करता है कि यही अनुराग अथाह होने के बावजूद, उसकी अंतरात्मा के केंद्र में विराजमान है तथा प्रेम के एक विचार से प्रेम के दूसरे विचार की ओर हरकत नहीं करता, न ही मोहब्बत के कर्मों से मोहब्बत के अन्य कर्मों की ओर गतिशील है?

तथा क्या बिल्कुल प्रेम की ही तरह, समय अविभाजित तथा गतिशून्य नहीं है?

परंतु अपने बोध में अगर तुम्हें समय को मौसमों के हिसाब से नापना पड़ेगा ही, तो प्रत्येक मौसम को सभी अन्य मौसमों के इर्दगिर्द परिक्रमा करने दो।

तथा आज के दिन को बीते हुए कल के साथ स्मरण से आलिंगन होने दो तथा भविष्य को कामना से।

सज्जनता तथा दुष्टता

तब शहर के एक बुजुर्ग ने कहा, हमें सज्जनता तथा दुष्टता के विषय में कहो।

तो उसने उत्तर दिया :

तुम्हारे भीतर स्थित अच्छे के बारे में तो मैं बात कर सकता हूँ परंतु बुरे के विषय में नहीं।

क्योंकि बुरा इसके सिवा है कि वह वह अच्छा है जो अपनी ही भूख एवं प्यास से संतप्त हुआ है?

निस्संदेह जब अच्छा भूखा होता है तो वह अँधेरी गुफा में भी आहार तलाश करता है तथा प्यासा हो तो जमा हुआ पानी भी पी लेता है।

तुम अच्छे हो, जब तुम अपने साथ सुसंगत में होते हो।

अपितु जब तुम अपने साथ सुसंगत में नहीं होते हो, तब भी तुम बुरे नहीं होते हो।

क्योंकि एक फूट पड़ा हुआ घर चोरों का अड्डा नहीं है; यह सिर्फ एक फूट पड़ा हुआ घर है।

तथा बिना पतवार की कोई नाव खतरनाक द्वीपों के बीच बे-इरादा मारे मारे फिर सकती है, मगर फिर भी डूब के समुद्र की तह में गिर जाने से बच सकती है।

तुम अच्छे होते हो जब तुम अपने स्वयं से प्रदान करने का प्रयास करते हैं।

अपरंच, जब तुम अपने स्वयं के लिए कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो तुम बुरे नहीं होते हो।

क्योंकि जब तुम कुछ लाभ प्राप्त करने की कोशिश करते हो तो तुम सिर्फ भूमि में जमे हुए एक जड़ के समान होते हो, जो उसके वक्ष से आहार चूसती है।

निश्चिततः फल जड़ से नहीं कह सकता, "मेरी तरह बनो, पक्का एवं पूर्ण, और सदा अपनी बहुलता औरों को प्रदान करो।"

फल के लिए प्रदान करना एक जरूरत है, जैसे जड़ के लिए प्राप्त करना अनिवार्य है।

तुम अच्छे हो जब तुम अपनी वाणी में पूरा जागरूक होते हो।

फिर भी तुम बुरे नहीं होते हो जब तुम नींद की अवस्था में होते हो तथा तुम्हारी जीह्वा उद्देश्यहीन लड़खड़ाती रहती है।

इसके अतिरिक्त, लड़खड़ाती वाणी भी एक निर्बल जीह्वा को शक्ति प्रदान कर सकती है।

तुम मंगलकारी हो, जब तुम अपने लक्ष्य की ओर दृढ़ता तथा निर्भीक क़दमों के साथ गमनशील होते हो।

फिर भी तुम अमंगलकारी नहीं हो जब तुम उस ओर त्रुटिपूर्ण टाँगों से चलते हो।

त्रुटिपूर्ण टाँगों से चलते वाले भी पीछे की ओर नहीं जाते।

परंतु तुम, हे मज़बूत तथा शीघ्रगामी व्यक्तियो, इस बात का ध्यान रखो कि कहीं तुम इसे करुणा ठान कर त्रुटिपूर्ण टाँगों से चलते वाले व्यक्ति के सामने लंगड़ा कर न चलो।

तुम अनगिनत रूपों से कल्याणकारी हो, तथा जब तुम कल्याणकारी नहीं होते हो, तब भी तुम बुरे नहीं होते हो।

तब तुम केवल मटरगश्त तथा सुस्त होते हो।

अफसोस कि बारहसिंगे कछुओं को शीघ्रता नहीं सिखा सकते हैं!

तुम्हारे अपने विशाल अस्तित्व की दीर्घकालिक अभिलाषा में तुम्हारी अच्छाई है : तथा वह आरज़ू तुम सब में आवासित है।

परंतु तुम में से कुछ व्यक्तियों में यह तीव्र इच्छा एक प्रचण्ड़ धारा है, जो अपने साथ पर्वतों के रहस्य तथा जंगल के गीत लिए जाती है।

जबकि अन्य लोगों के अंदर यह एक चौड़ी नदी है जो स्वयं को कोणों तथा मोड़ों में खो देती है तथा समुद्र तट तक पहुँचने में विलम्ब करती है।

परंतु यह ध्यान रहे कि जिस व्यक्ति की उत्कंठा अत्यधिक है वह न्यून इच्छा रखने वाले से यह न कहे, "तुम क्यों धीमी गति से तथा ठहर ठहर के चल रहे हो?"

क्योंकि वास्तव में अच्छा व्यक्ति नग्न आदमी से यह

नहीं पूछता है, “तुम्हारे कपड़े कहाँ हैं?” न ही वह बेघर से यह सवाल करता है, “तुम्हारे घर पर क्या विपदा आ पड़ी?”

पूजा

फिर एक पुजारिन ने कहा कि हमें पूजा के बारे में कहो।

तथा उसने जवाब दिया :

तुम अपनी विपत्ति तथा आवश्यकता की अवधि में वंदना करते हो; काश ऐसा होता कि तुम परिपूर्ण आह्लाद तथा प्रचुरता के दिनों में भी पूजा करते।

क्योंकि जीवन्त व्याप्त व्योम में अपने आप को विस्तृत करने के सिवा अर्चना और क्या है?

और अगर तुम आराम के लिए अपने अँधकार को अंतरिक्ष में उड़ेलते हो, तुम्हारे आह्लाद के लिए भी तुम्हारे हृदय की प्रभात को सामने उड़ेल देना होगा।

तथा तुम्हारी आत्मा द्वारा तुम्हें प्रार्थना के लिए पुकारने पर यदि तुम केवल अश्रु बहा सकते हो, तो तुम्हारे रोने के बावजूद, उसे तुम को बारंबार उकसाना होगा, जब तक कि तुम हँसते हुए पूजा करने आजाओ गे।

प्रार्थना करते समय तुम ऊँचा हो कर ठीक उस समय प्रार्थना में संलग्न लोगों से पवन में मुलाकात करते हो, जिनसे तुम्हारी भेंट प्रार्थना की अवस्था के बिना नहीं हो सकती है।

इसलिए अदृश्य मंदिर में तुम्हारे गमन का उद्देश्य केवल परमानंद तथा मधुर समन्वय हो।

क्योंकि तुम्हारे मंदिर में प्रवेश का उद्देश्य यदि केवल माँगना है तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा;

तथा यदि तुम इस में स्वयं को तुच्छ करने के लिए प्रवेश होओगे तो तुम्हें उन्नयन प्रदान नहीं होगा;

और अगर तुम देवालय में दूसरों की भलाई की खातिर भी भीख माँगने के लिए जाओगे तुम्हारी कोई सुनवाई नहीं होगी।

तुम्हारे लिए यही पर्याप्त है कि तुम शिवालय में अदृश्य जाओ।

मैं तुम्हें शब्दों में अर्चना करने की शिक्षा नहीं दे सकता।

परमेश्वर तुम्हारे शब्दों को केवल तभी सुनता है जब वह स्वयं ही उन शब्दों को तुम्हारे होंठों से प्रकट करता है।

तथा मैं तुम्हें सागरों, जंगलों तथा पहाड़ों की प्रार्थना नहीं सिखा सकता।

परंतु तुम, जो पहाड़ों, जंगलों तथा सागरों से पैदा हुए हो, तुम उनकी प्रार्थना को अपने हृदय में पा सकते हो।

और यदि तुम सिर्फ इतना करोगे कि रात के सन्नाटे में कान धरोगे, तो तुम उन्हें मौनता से यह कहते सुनोगे :

हे हमारे परमेश्वर, तुम जो हमारे पंखयुक्त अस्तित्व हो, हमारी अंतरात्मा में तुम्हारी इच्छा ही कामना करती है।

"हमारे अंदर यह तुम्हारी अभिलाषा है जो अभिलाषी है।

"हमारे भीतर तुम्हारी उत्कंठा ही हमारी रातों को, जो तुम्हारी हैं, दिनों में बदलती है, जो दिन भी तुम्हारे ही हैं।

"हम तुम से कुछ नहीं माँगते हैं, क्योंकि हमारी आवश्यकतायें हमारे अंदर पैदा होने से पहले ही तुम उन्हें जानते हो;

"तुम हमारी जरूरत हो, तथा अपने अस्तित्व से हमें अधिक प्रदान करके तुम हमें सब कुछ प्रदान कर देते हो।"

आनन्द

तब एक तपस्वी, जो वर्ष में एक बार शहर आता था, सामने आया तथा बोला, हमसे आनन्द की बात करो ।

तथा उसने यह जवाब दिया :
आनन्द स्वतंत्रता का गीत है,
परंतु यह स्वयं स्वतंत्रता नहीं है ।
यह तुम्हारी इच्छाओं का फलना फूलना है,
परंतु यह उनका फल नहीं है ।
यह ऊँचाई को पुकारती हुई एक गहराई है;
परंतु यह स्वयं न तो गहरी है, न ही ऊँची ।
यह पिंजरे में कैद की प्रारंभिक उड़ान है ।
परंतु यह अंबर के पार जाना नहीं है ।
अरे हाँ, पूर्ण यथार्थ में आनन्द स्वतंत्रता-गान है ।
और मैं भरपूर तमन्ना लेकर तुम से हृदय की पूरी गहराई के साथ यह गाते सुनना चाहता हूँ; परंतु फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि तुम गायन में अपना हृदय हार बैठो ।

तुम्हारे कुछ युवा आनन्द के पीछे इस तरह लगे रहते हैं, जैसे कि यही सब कुछ है; तथा उन पर राय कायम की जाती है तथा उन्हें फटकार लगायी जाती है ।

मैं न तो उन पर कोई राय दूँगा न उनकी मलामत करूँगा; मैं उन्हें इसके पीछा करने दूँगा ।

क्योंकि वह आनन्द पायेंगे, परंतु वह अकेला नहीं होगा;

आनन्द की सात बहिनें हैं, तथा उनमें से न्यूनतम भी सबसे आनन्द से अधिक सुंदर है।

क्या तुमने उस व्यक्ति की घटना नहीं सुना है जो जड़ों की खोज में ज़मीन की खुदाई कर रहा था परंतु उसे खज़ाना मिल गया?

तथा तुम्हारे कुछ बड़े बूढ़े आनन्द को अफसोस के साथ याद किया करते हैं जैसे कि वह मदमस्ती की हालत में दाखिल हुईं कुछ त्रुटियाँ हों।

परंतु अफसोस करना दिमाग को मेघमय करना है मगर यह कोई पाप का दण्ड़ नहीं है।

उन्हें अपनी खुशियों को कृतज्ञता के भाव से स्मरण करना चाहिए, जैसे कि वह ग्रीष्म-ऋतु के उपज की कटाई को याद करते हैं।

फिर भी अगर उन्हें अफसोस करने ही में आराम मिलता है, तो उन्हें आराम पाने दो।

तथा तुम में कुछ ऐसे भी हैं जो न तो इतने जवान हैं कि खुशियों की कामना कर सकें, न ही इतने बूढ़े कि वह उन्हें याद कर सकें;

कामना तथा स्मरण करने के अपने भय में वे सभी खुशियों से परहेज़ करते हैं, कि कहीं वे आत्मा की अनदेखी न कर बैठें या उस का उल्लंघन न करें।

परंतु उनकी इस परहेज़ में भी उनकी खुशी संलग्न है।

और इस तरह से वे भी एक खज़ाना पा लेते हैं, यद्यपि वे काँपते हाथों से खुदाई करते हैं।

पर मुझे बताओ कि ऐसा कौन हो सकता है जो आत्मा को ठेस पहुँचा सकता है?

क्या बुलबुल रात की मौनता को या जुगनू सितारों को ठेस पहुँचा सकता है?

और क्या तुम्हारी लौ या तुम्हारा धुआँ आँधी पर बोझ बन सकता है?

तुम सोचते हो कि आत्मा एक निश्चल तालाब है जिसमें तुम लाठी मार कर आंदोलन पैदा कर सकते हो?

प्रायः तुम खुद को आनन्द से वंचित करके केवल अपनी कामनाओं को अपने अस्तित्व के गुप्त-स्थल में सुरक्षित कर लेते हो।

परंतु किसे पता है कि आज के दिन जो भूली हुई वस्तु लगती है वह कल उदय होने को प्रतीक्षारत हो?

तुम्हारे शरीर को भी अपनी धरोहर तथा अपनी यथोचित जरूरत का ज्ञान है तथा वह धोखा नहीं खा सकता।

तथा तुम्हारा शरीर तुम्हारी आत्मा की वीणा है,

तथा यह तुम पर निर्भर है कि तुम इसे मधुर गाने निकालो या उलझे हुए स्वर।

तथा अब तुम अपने हृदय में यह सवाल करते हो कि, “आनन्द की अध्याय में हम यह भेद कैसे करें कि कौन

सी चीज़ अच्छी तथा कौन सी अच्छी नहीं है?”

अपने खेतों तथा बागों में जाओ, तो तुम्हें ज्ञान प्राप्त होगा कि फूलों से शहद इकट्ठा करना मधुमक्खी की प्रसन्नता है,

परंतु मधुमक्खियों को अपना शहद देने में सुमन की भी खुशी है।

क्योंकि मधुमक्खी के लिए एक फूल जीवन का फव्वारा है,

जबकि एक कुसुम के लिए मधुमक्खी प्यार का संदेशक होती है,

तथा मधुमक्खी तथा फूल, दोनों के लिए खुशी का देना तथा उसे स्वीकार करना एक आवश्यकता एवं एक आनंद है।

अनाथा प्रदेश के निवासियो ! अपनी खुशियों में तुम मधुमक्खी तथा फूल के समान हो जाओ।

सौंदर्य

फिर एक कवि ने कहा, हमें सौंदर्य के बारे में कहिये।

तथा उसने उत्तर दिया :

तुम सुंदरता को कहाँ खोजोगे और तुम उसे कैसे मिलोगे जब तक कि वह स्वयं तुम्हारी पथ एवं तुम्हारी नेता न बन जाए?

और तुम उससे कैसे बातें करोगे सिवाय इसके कि वह तुम्हारी वाणी स्वयं बुने?

व्यथित तथा घायल व्यक्ति कहते हैं, “सौंदर्य दयालु एवं नम्र है।

“स्वयं अपनी शोभा से अर्द्ध-लज्जालु, एक जवान माँ की तरह वह हमारे बीच चलती है।”

तथा कामना के भाव से आसक्त कहते हैं, “नहीं, सुंदरता तो शक्तिशाली तथा रोबदार है।

“तूफान की तरह वह हमारे नीचे से भूमि तथा हमारे ऊपर से आकाश हिला देती है।”

थकित एवं शिथिल आदमी कहता है, “सौंदर्य धीमी धीमी सरगोशियों से बना है। वह हमारी आत्मा में बोलता है।

“छाया के डर से काँपते हुए मद्धिम प्रकाश की तरह उसकी आवाज़ हमारी मौनताओं के सामने झुक जाती है।”

परंतु बेचैन व्यक्ति कहता है, “हमने उसे पहाड़ों में चीखते चिल्लाते सुना,

“तथा उस की चीखों में टापों की आवाज, पंखों की फड़फड़ाहट तथा सिंहों की दहाड़ें सुनाई देती थीं ।”

रात में शहर की रक्षा करने वाले कहते हैं, “सुंदरता प्रभात के साथ पूरब से उदय होगी ।”

तथा दोपहर के समय कर्मठ तथा यात्री कहते हैं, “हमने उसे सूर्यास्त के दरीचों से ज़मीन पर झाँकते हुए देखा है ।”

शीतकाल में बर्फ से ढके हुए सब के सब कहते हैं, “वह वसंत के साथ पहाड़ों पर उछलते कूदते आएगी ।”

तथा ग्रीष्मकाल की कड़ी धूप में फसल काटने वाले कहते हैं, “हमने उसे ऋतु के पत्तों के साथ नाचते हुए देखा है, तथा हमें उसकी ज़ुल्फ़ों में बर्फ की एक दरार दृष्टिगोचर हुई ।”

यह सारी बातें तुमने सुंदरता के विषय में कही हैं,

फिर भी वास्तव में तुमने उसकी नहीं बल्कि अतृप्त आवश्यकताओं की बात कही ।

तथा सौंदर्य एक आवश्यकता नहीं अपितु परमानंद है ।

यह न कोई तृष्णारत मुँह है, न ही आगे की ओर फैलाया हुआ कोई खाली हाथ,

अपितु यह एक ज्वलंत हृदय तथा मंत्रमुग्ध आत्मा है ।

यह कोई चित्र नहीं है जिसे तुम देखो, न कोई गीत है, जिसे तुम श्रवण करो।

परंतु यह वह छवि है जो तुम्हें आँखें मूंदे लेने के पश्चात् भी दृष्टिगोचर होगी और ऐसा गान है जो कर्ण बंद करने के बाद भी सुनाई देगा।

यह वृक्ष में काटी हुई किसी दरार से बह रहा कोई रस नहीं, यह पंजे में लगा कोई पंख नहीं है,

अपितु यह सदैव खुला एक उद्यान तथा हर समय उड़ान में व्यस्त स्वर्गदूतों का एक झुंड है।

अनाथा प्रदेश के निवासियो! सुंदरता ज़िंदगी है, जब ज़िंदगी अपनी पवित्र मुखाकृति से घूँघट हटाती है।

परंतु तुम ही ज़िंदगी हो तथा तुम ही घूँघट।

सौंदर्य, दर्पण में स्वयं का अवलोकन कर रहा शाश्वत्व है।

धर्म

तब एक वृद्ध साधु ने कहा, हमें धर्म की कहो।

तो उसने कहा :

क्या मैं ने आज इसके अतिरिक्त कोई और बात कही है?

क्या धर्म सभी कर्म तथा सभी विचार नहीं है,

तथा वे भी जो न कोई क्रिया न विचार है, परंतु नित्य आत्मा में प्रकट होने वाला आश्चर्य एवं अद्‌भुतता है;

जो उस समय भी आत्मा के अंदर तरंगित रहता है जबकि हाथ पत्थर तराशने या करघा चलाने में व्यस्त रहते हैं : क्या यह सब धर्म नहीं हैं?

कौन अपनी आस्था को अपने कर्मों से या अपने विश्वास को अपने व्यवसाय से पृथक् कर सकता है;

कौन अपनी घड़ियों को सामने फैलाकर कह सकता है, "यह परमेश्वर के लिए है तथा यह मेरे लिए है; यह मेरी आत्मा के लिए है और यह दूसरा हिस्सा मेरे शरीर के लिए;"

तुम्हारी सभी घड़ियाँ वह पंख हैं जो पवन में परस्पर फड़फड़ाते रहते हैं।

जो व्यक्ति अपनी नैतिकता को केवल अपने सर्वोत्तम परिधान की तरह पहने, वह नग्न रहे तो उत्तम है।

वायु तथा दिनकर उसकी त्वचा में छिद्र नहीं करेंगे।

तथा जो अपने व्यवहार को नैतिकता में सीमित कर

के रखता है वह अपने गायक पंछी को एक पिंजड़े में बंद कर देता है।

स्वतंत्रतम गान छड़ों तथा कांटेदार तारों से होकर नहीं निकलता है।

तथा वह व्यक्ति जो वंदना को खोलने की ही नहीं अपितु बंद करने की भी खिड़की समझता है, उसने अभी तक अपनी आत्मा के निवास स्थान की यात्रा नहीं की है, जिसकी खिड़कियाँ एक प्रभात से लेकर दूसरी प्रभात तक व्याप्त हैं।

तुम्हारा दैनिक जीवन तुम्हारा देवालय एवं धर्म है।

जब कभी तुम उस में प्रवेश करोगे, तो अपना समस्त साथ ले जाओ।

अपने साथ हल, लोहार की भट्ठी, हथौड़ा तथा वीणा ले जाओ,

अर्थात् ऐसी वस्तुएँ जिन्हें तुम ने जरूरत के मद्देनज़र या यों ही मनोरंजन की खातिर बनाया है।

क्योंकि भावावेग की अवस्था में तुम अपनी उपलब्धियों से ऊपर नहीं उठ सकते, न ही अपनी असफलताओं से नीचे गिर सकते हो।

तथा अपने साथ सभी लोगों को ले जाओ :

क्योंकि वंदना करते समय तुम उनकी आशाओं से ऊँची उड़ान नहीं भर सकते, न ही उनकी निराशा से नीचे हो सकते हो।

तथा अगर परमेश्वर का बोध चाहते हो तो पहेलियों

का समाधानकर्ता न बनो।

बल्कि अपने आसपास देखो, तो तुम उसे अपने बच्चों के साथ खेलते हुए पाओगे।

तथा वातावरण में देखो, तुम उसे बादलों में चलते हुए, बिजली में अपने हाथ फैलाए हुए तथा वर्षा के साथ नीचे भूमि पर उतरते हुए देखोगे।

तुम उसे फूलों में मुस्कुराते, तथा फिर उसे उड़ानमग्न होते हुए, पेड़ों से अपने हाथ हिलाते हुए देखोगे।

मृत्यु

तब अल्मित्रा फिर बोलीं, अब हम मरण के विषय में पूछना चाहते हैं।

तथा उसने कहा :

तुम देहान्त का रहस्य जानना चाहते हो।

परंतु तुम उसे कैसे पाओगे, जब तक कि तुम उसे जीवन के हृदय में न खोजोगे?

जो दिन के लिए अंधी हैं, उन अंधकार की अभ्यस्त आँखों को ले के, उल्लू, प्रकाश के रहस्य को खुलस्त नहीं कर सकता।

अगर तुम सचमुच मृत्यु की भावना का अवलोकन करना चाहते हो, तो अपने हृदय को जीवन के शरीर के लिए पूरी तरह खोल दो।

क्योंकि जीवन तथा मरण एक हैं, जैसे सरिता और सागर एक हैं।

तुम्हारी आशाओं एवं इच्छाओं की गहराई में परलोक संबंधी तुम्हारा मौन ज्ञान निहित है;

तथा बर्फ के नीचे स्वप्नरत विद्यमान बीज की तरह, तुम्हारा हृदय भी वसंत के सपने सजाता है।

सपनों पर भरोसा रखो, क्योंकि उनमें अनादि का द्वार छुपा हुआ है।

मौत से तुम्हारा डर केवल सम्राट के सामने खड़े

चरवाहे की थरथराहट है, जब कि सम्राट अपना हाथ उस के सम्मान की खातिर उसके सिर पर रखने वाला होता है।

अपनी थरथराहट के नीचे क्या चरवाहा खुश नहीं होता है कि उसे सम्राट के चिन्ह से सम्मानित किया जाएगा?

ऐसा होने के बावजूद भी क्या उसका अधिकतर ध्यान थरथराहट की ओर नहीं रहता?

कहो कि पवन में नग्न खड़े होने तथा सूरज की प्रचंडता से पिघलने के अतिरिक्त मरण क्या है?

तथा इसके अतिरिक्त श्वास बंद होना क्या है, कि साँस अपने बेचैन उतारचढ़ाओं से मुक्ति पाए ताकि वह उन्नयन तथा विस्तार प्राप्त कर सके और किसी अवरोध के बिना परमेश्वर को खोज सके?

जब तुम मौनता की सरिता से पियोगे तब ही तुम निस्संदेह गाओगे।

तथा जब तुम पर्वत-शिखर पर पहुँचोगे, तब ही तुम चढ़ना आरंभ करोगे।

तथा जब पृथ्वी तुम्हारे हाथों एवं पैरों पर अपना अधिकार जताएगी तब ही तुम वास्तव में नृत्य करोगे।

विदाई

अब संध्या हो चुकी थी।

तब मनीषी अल्मित्रा पुकार उठीं, धन्य हो यह दिन, यह स्थान तथा तुम्हारी आत्मा, जो हम से सहवाचक हुई!

तो उसने जवाब दिया :

क्या यह मैं था, जो बोल रहा था?

क्या मैं श्रोता भी नहीं था?

तब वह मंदिर की सीढ़ियों से नीचे उतरा और सभी लोग उसके पीछे पीछे हो लिए। फिर वह अपने जहाज़ पर पहुँचा तथा उसके पटाव पर खड़ा हुआ।

लोगों की ओर फिर चेहरा करके उसने अपना स्वर ऊँचा करके कहा :

अनाथा प्रदेश के निवासियो! पवन मुझे तुमसे अलग होने को कह रहा है।

पवन की तुलना में मैं कम उतावला हूँ, किंतु फिर भी मुझे जाना ही होगा।

हम घुमक्कड़ व्यक्ति, जो सदा एकांत पथ के अन्वेषक होते हैं, हम उसी स्थान पर प्रभात आरंभ नहीं करते जहाँ हमारी साँझ हुई थी, तथा कोई सूर्योदय हमें उसी स्थल पर नहीं पाता है जहाँ सूर्यास्त ने हमें छोड़ा था।

यहाँ तक कि जब पृथ्वी सो रही होती है तब भी हम यात्रामग्न रहते हैं।

हम स्थिर अटल वनस्पति के बीज हैं, और यह हमारे हृदय की परिपक्वता की विशेषता के कारण है कि हमें वायु के हवाले किया जाता है तथा बिखेर दिया जाता है।

तुम्हारे साथ बिताए हुए दिन थोड़े थे, तथा उनसे भी थोड़े मेरे बोले हुए शब्द।

परंतु यदि मेरी आवाज़ तुम्हारे कानों में क्षीण हो जाये तथा मेरा प्रेम तुम्हारे संस्मरण से समाप्त हो जाए, तो मैं फिर आऊँगा,

और अधिक उदार हृदय लेकर आऊँगा एवं आत्मा के सम्मुख और अधिक आज्ञापालक होंठ लिए बातें करूँगा।

हाँ, मैं माहासागर के ज्वार-भाटा के साथ लौटूँगा,

और यद्यपि मृत्यु मुझे छुपा दे, तथा विशालतम खामोशी मुझे आलिंगन करे, फिर भी मैं तुम्हारी समझ खोजने आऊँगा।

तथा मैं व्यर्थ में खोज नहीं करूँगा।

मैं जो कुछ बोला यदि उसमें कुछ सत्य है, तो वह सच्चाई अपने आप को एक अधिक स्पष्ट आवाज़ तथा तुम्हारे विचारों से अधिक सुसंगत शब्दों में प्रकट करेगी।

मैं वायु के साथ जा रहा हूँ, अनाथा प्रदेश के निवासियो! परंतु शून्यता में नहीं;

और अगर यह दिन तुम्हारी आवश्यकताएँ तथा मेरे प्रेम की परिपूर्ति नहीं है तो यह भविष्य के दिन के लिए आश्वासन रहे ।

मनुष्य की जरूरतें बदलती रहती हैं, परंतु मोहब्बत सनातन होती है, उसकी यह कामना भी परिवर्तनशील नहीं है कि उसकी मोहब्बत उसकी आवश्यकताओं को तृप्त करे ।

इसलिए यह जान लो कि बृहत्तर मौनता से मैं वापस आऊँगा ।

खेतों में केवल औस छोड़कर, जो धुंध सुबह उड़ जाती है, वह उठेगी तथा मेघ के रूप में एकत्र हो जाएगी, तब वह पुनः वृष्टि बनकर वर्षेगी ।

तथा कोहरे की अवस्था से भिन्न मैं नहीं था ।

मैं रात के सन्नाटे में तुम्हारी गलियों में घूमा हूँ, तथा मेरी आत्मा तुम्हारे घरों में प्रविष्ट हुई है,

और तुम्हारी धड़कनें मेरे हृदय में तथा तुम्हारी साँसें मेरी मुखाकृति पर थीं, और मैं तुम सब को जानता था ।

अरे हाँ, मुझे तुम्हारी खुशी तथा तुम्हारा दर्द ज्ञात था, और तुम्हारी नींद में तुम्हारे सपने मेरे स्वप्न थे ।

और प्रायः तुम्हारे मध्य में मैं पर्वतों के बीच एक सरोवर था ।

तुम्हारे भीतर के पहाड़ों की चोटियों तथा मोड़ ही मोड़ वाली ढलानों के साथ साथ मैं ने तुम्हारे विचार एवं इच्छाओं के भ्रमणशील झुंडों को भी प्रतिबिम्बित किया ।

तथा मेरी मौनता के समीप सरिताओं के रूप में तुम्हारे बच्चों की हँसी तथा दरियाओं के तरह तुम्हारे युवाओं की आरज़ूयें आईं।

तथा जब वह मेरी गहराई में उतरीं तब भी सरिताओं एवं दरियाओं ने गीतांगे होना बंद नहीं किया।

परंतु हँसी से भी अधिक मधुर तथा तमन्ना से भी महान वस्तु मेरे पास आई।

और यह तुम में आवासित, असीम था;

वह अथाह व्यक्ति, जिसके भीतर तुम सब मात्र कोशिकायें एवं स्नायुएँ हो;

वह, जिस की धुन में तुम्हारा सारा गायन केवल हृदय की एक स्वरहीन धड़कन है।

उस व्यापक मनुष्य के भीतर ही तुम व्याप्त हो,

और उसका दर्शन करने में ही मैंने तुम्हारा दर्शन किया तथा तुम्हें प्यार किया।

क्योंकि मोहब्बत ऐसी कौन सी दूरियाँ पार कर सकती है जो व्यापक आकाश में न हों;

कौन सी अवधारणायें, कौन सी अपेक्षायें तथा कौन से अनुमान उस उड़ान से अधिक ऊँचाई प्राप्त कर सकते हैं;

सेब के पुष्पों से ढके हुए एक विशाल शाहबलूत की तरह व्यापक मानव तुम्हारे भीतर विद्यमान है।

उसकी शक्ति तुम्हें भूमि से चिपक के रखती है, उसका सौरभ तुम्हें अंतरिक्ष में ऊँचा करता है तथा इसकी स्थिरता में तुम अविनाशी हो।

तुम्हें बताया गया है कि एक श्रृंखला ही की तरह तुम उसकी कमज़ोरतम कड़ी जैसे कमज़ोर हो।

यह मात्र अर्द्ध यथार्थ है। तुम अपनी सर्वोत्तम शक्तिशाली कड़ी के समान सशक्ति भी हो।

तुम्हारे तुच्छतम कार्य से तुम्हें नापना महासागर की शक्ति का हिसाब उसकी झाग की अस्थिरता से करना के समान है।

तुम्हारी असफलताओं से तुम्हारे विषय में निर्णय स्थापित करना ऋतुओं को उनकी अस्थिरता के लिए आरोप धरना है मानों।

हाँ, तुम एक महासागर के समान हो,

यद्यपि लंगर लगाए हुए भारी भरकम जहाज़ तुम्हारे तट पर ज्वार-भाटा की प्रतीक्षा में हैं, फिर भी, महासागर ही की तरह, तुम अपने ज्वार-भाटा की प्रवाह में तीव्रता नहीं ला सकते।

और तुम मौसमों जैसे भी हो,

यद्यपि अपने शीतकाल में तुम अपने वसंत से इनकार करते हैं,

फिर भी, तुम्हारे अंदर आरामरत बहार, अपनी ऊँघ में मुस्कुराती है तथा नाराज़ नहीं होती है।

ऐसा न विचारो कि मैं यह सम्पूर्ण वचन इस उद्देश्य से कह रहा हूँ, कि तुम एक दूसरे से यह कहो, “उसने हमारी व्यापक प्रशंसा की। उसने हमारे भीतर केवल शुभ ही शुभ देखा।”

मैं तुम से शब्दों में केवल वही कहता है जो तुम स्वयं

अपने विचारों में जानते हो।

तथा शब्दों में व्यक्त ज्ञान शब्दों में अव्यक्त ज्ञान की एक परछाईं के सिवा और क्या है;

जो हमारे बीते हुए दिनों का विवरण सुरक्षित रखती है, उस एक मोहरबंद स्मृति की तरंगें तुम्हारी अवधारणायें एवं मेरे शब्द हैं,

तथा यह उन प्राचीन दिनों के संस्मरण को भी सुरक्षित रखती है जब पृथ्वी न तो हमें जानती थी और न ही उसे अपना आत्म-बोध था,

और उन रातों की यादों को भी सुरक्षित रखती है जब पृथ्वी भ्रम में ग्रस्त थी।

बुद्धिमान् व्यक्ति तुम्हारे पास तुम्हें अपनी बुद्धिमत्ता प्रदान करने आए। मैं तुम्हारी बुद्धिमानी प्राप्त करने आया :

और देखो, मुझ पर वह उद्भेद हुआ जो बुद्धिमानी से उच्च है।

यह तुम्हारे अंदर ज्योति का मनोभाव है जो लगातार अपनी सामग्री बढ़ाता है,

जबकि तुम, इसके प्रसार से अबोध, अपने दिनों के मुरझाने पर शोक करते हो।

कब्र से भयभीत यह जीवन है जो शरीर में जीवन खोजता है।

यहाँ कोई कब्र नहीं है।

यह पहाड़ एवं मैदान पलनाएँ एवं गुज़र-पत्थर हैं।

जब कभी तुम इन कब्रिस्तानों से गुज़रो जहाँ तुमने अपने पूर्वजों को रखा है, वहाँ भलीभाँति देखो, और तुम अपने आपको एवं अपने बच्चों को वहाँ हाथ से हाथ मिलाते हुए नृत्यमग्न पावोगे ।

वास्तव में तुम अक्सर अनजाने में जश्न मनाते हो ।

अन्य लोग तुम्हारे पास आए, तथा तुम्हारे विश्वास के लिए उनके द्वारा प्रस्तुत किए स्वर्णिम आश्वासन के बदले तुमने उन्हें केवल धन, शक्ति तथा वैभव दिए ।

मैंने तो तुम्हें आश्वासन से भी न्यूनतम दिया है, पर फिर भी तुम मेरे लिए अधिक उदार हुए ।

तुमने मुझे जीवन के लिए अधिक गहरी तृष्णा प्रदान की है ।

निस्संदेह किसी व्यक्ति के लिए इस से महान उपहार कोई नहीं है जो उपहार उस के सभी लक्ष्यों को तृष्णारत होंठ एवं सम्पूर्ण जीवन को एक फव्वारे में बदल दे ।

तथा इसी में मेरा सम्मान एवं मेरा पुरस्कार है,

कि जब कभी भी मैं प्यास बुझाने के लिए फव्वारे के पास आता हूँ, मैं जीवंत जल को भी तृष्णारत पाता हूँ ।

तथा जब मैं उसे पीता हूँ, वह मुझे पीता है ।

उपहार स्वीकार करने के संदर्भ में तुम में से कुछ लोगों ने मुझे घमंडी तथा अत्यधिक लज्जालु समझा है ।

निस्संदेह में मज़दूरी लेने में बहुत गौरवित हूँ, परंतु उपहार स्वीकार करने में नहीं ।

तथा यद्यपि मैं ने पहाड़ियों में बेर खाए जब तुम मुझे

अपने भोजन-स्थल में बिठातना चाहते थे,

और जब तुम मुझे हर्ष से शरण देते, परंतु मैं मंदिर के बरामदे में सोया ।

तब भी, क्या यह मेरे रात-दिन के विषय में तुम्हारा प्यार भरा ध्यान नहीं थी, कि जिसने मेरे मुँह के लिए भोजन को स्वादिष्ट बनाया तथा मेरी नींद को परिकल्पनायें प्रदान कीं;

इन चीज़ों के कारण मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञता अर्पण करता हूँ :

तुम बहुत कुछ देते हो परंतु तुम्हें यह पता ही नहीं होता है कि तुम ने कुछ दिया भी है कि नहीं ।

यह यथार्थ है कि स्वयं को दर्पण में निहारने वाली कृपा, शिला बन जाती है ।

तथा स्वयं को कोमल नामों से पुकारने वाला उत्तम कार्य आपदा का पिता बन जाता है ।

और तुम में से कुछ लोगों ने मुझे पृथक् एवं अपने निजी एकांत में मदमस्त कहा है,

तथा तुमने कहा है, “वह मनुष्यों से नहीं, अपितु जंगल के वृक्षों से परामर्श करता है ।

“वह पहाड़ियों की चोटियों पर बैठ कर हमारे शहर को नीचा देखता है ।”

यह सच है कि मैं पहाड़ियों पर चढ़ा हूँ तथा सुदूर के क्षेत्रों में घूमा फिरा हूँ ।

बृहत् ऊँचाई या पर्याप्त दूरी के सिवा, मैं तुम्हें कैसे

देख सकता था?

कोई वास्तव में कैसे निकट हो सकता है जब तक वह दूर न हो?

तथा तुम्हारे बीच रहने वाले कुछ अन्य लोग मेरे पास आए तथा, शब्दों का प्रयोग न किए, मुझसे कह गए :

"अजनबी ! अजनबी ! अलभ्य ऊँचाइयों के प्रेमी ! तुम उन शिखरों पर क्यों निवास करते हैं जहाँ बाज़ अपने घोंसले बनाते हैं?

"तुम अप्राप्य के खोजकर्ता क्यों हो?

"तुम अपने जाल में किन तूफ़ानों को फँसाओगे?

"तथा आकाश में तुम किन वाष्पाय पक्षियों का शिकार करोगे?

"आओ, तथा हम में एक हो जाओ।

"नीचे उतर आओ, और अपनी भूख को हमारी रोटियों से मिटा लो तथा अपनी प्यास हमारी शराबों से बुझा लो।"

अपनी आत्माओं के एकांत में उन्होंने यह चीज़ें कहीं;

परंतु यदि उनकी तनहायियों में और अधिक गहराई होती तो उन्हें पता चल जाता कि मुझे केवल तुम्हारी खुशी तथा तुम्हारे दर्द के रहस्य की खोज थी,

और मैं ने आकाश में चलने वाले तुम्हारे बड़े अस्तित्व का ही शिकार किया।

परंतु आखेटक स्वयं भी शिकार हो गया;

क्योंकि मेरे धनुष से निकलने वाले कई वाण मेरे ही वक्ष को लक्ष्य साधने लगे।

तथा उड़ने वाला स्वयं रेंगने वाला भी था;

क्योंकि जब धूप में मेरे पंख फैले हुए थे, तो भूमि पर उनका साया एक कछुआ था।

तथा मैं, विश्वास करने वाला, संदेह करने वाला भी था;

क्योंकि अक्सर मैं ने अपनी उंगली अपने घाव में रखी है ताकि मुझे तुम पर और अधिक विश्वास तथा तुम्हारे बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त हो जाए।

तथा इसी विश्वास तथा इसी ज्ञान के आधार पर मैं यह कहता हूँ :

तुम अपने शरीर के अंदर बंदी नहीं हो, न ही तुम घरों तथा खेतों में कैद हो।

वह, जो तुम हो, पर्वतों से ऊपर बसेरा करता है तथा हवाओं के साथ घूमता-फिरता है।

यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो गर्मी पाने के लिए धूप में रेंगती है या अंधकार में सुरक्षा हेतु बिल बनाती है।

अपितु यह एक स्वतंत्र सत्ता है, एक भावना है जो पृथ्वी को लपेटती है तथा अंतरिक्ष में चेष्टा करती है।

यदि यह अस्पष्ट शब्द हों, तो उन्हें स्पष्ट करने का प्रयास न करो।

सभी तत्वों का आरंभ भ्रामक तथा मेघमय होता है, परंतु उनका अंत वैसी नहीं होता है।

और मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे एक प्रारंभ के रूप में स्मरण करो।

जीवन, तथा जीवित रहने वाली सभी चीज़ों का गर्भ

बिल्लौर में नहीं अपितु धुँधले आकार में ठहरता है।

तथा किसे पता कि बिल्लौर वास्तव में बिगड़ रही धुँध हो?

मैं चाहता हूँ कि मुझे याद करने में तुम यह याद करो :

कि तुम्हारे अंदर जो चीज़ सर्वाधिक निर्बल तथा संभ्रांत लगती है वह सबसे वलशाली एवं सर्वाधिक दृढ़ संकल्प वाली है।

क्या यह तुम्हारी श्वास नहीं हैं कि जिस ने तुम्हारी हड्डियों के ढांचे को सीधा तथा मज़बूत बनाया है?

क्या यह एक सपना नहीं है, जो तुम में से किसी को याद नहीं कि तुम ने उसे देखा है, जिस स्वप्न ने तुम्हारे शहर का निर्माण किया तथा इसमें विद्यमान हर वस्तु को तराशा?

अगर तुम सिर्फ उस साँस के उतार चढ़ाव को देख सकते तो तुम अन्य सभी चीजों को देखना बंद कर देते।

और अगर तुम स्वप्न की कानाफूसी सुन सकते तो तुम कोई अन्य आवाज़ नहीं सुनते।

परंतु न तो तुम वह देखते हो, न ही सुनते हो। और यह अच्छा है।

तुम्हारी आँखों को धुँधलाने वाला पर्दा वह हाथ उठाएँगे जिन्हों ने उसे बुना था।

और जो तुम्हारी कानों में भरी हुई है, उस मिट्टी में वही उँगलियाँ दरार करेंगीं जिन्होंने उसे गोंधा था।

फिर तुम देखोगे,

और तुम सुनोगे।

फिर भी तुम को इस बात का दुख नहीं होगा कि अंधेपन से तुम्हारा परिचय था, न ही कभी बहरा होने पर तुम्हें पश्चात्ताप होगा।

क्योंकि उस दिन तुम सभी चीज़ों के गुप्त उद्देश्यों का बोध प्राप्त करोगे।

और प्रकाश के समान तुम अंधकार को भी आशीर्वाद दोगे।

यह सब कहने के पश्चात् उसने अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाई तथा उसने अपने जलयान के जहाज़रान को नियंत्रणस्थल पर खड़ा देखा जो कभी पूर्ण पाल तो कभी दूरी पर निगाहें दौड़ा रहा था।

तथा उसने कहा :

मेरे जलयान का कप्तान धैर्य-मूर्ति है।

हवा चल रही है तथा पाल अधीर हैं;

यहाँ तक कि पतवार भी एक ओर का रुचिमूर्ति हो गया है;

फिर भी खामोशी के साथ मेरा कप्तान मेरे मौन होने की प्रतीक्षा कर रहा है।

तथा यह मेरे नाविक, जिन्हों ने महान सागर के गीत सुने हैं, इन्हों ने भी मुझे धैर्य के साथ सुना है।

अब यह और अधिक प्रतीक्षा नहीं करेंगे।

मैं तत्पर हूँ।

सरिता सागर तक पहुँच चुकी है, और अधिक एक बार महान माता अपने पुत्र को वक्ष से लगा रही है।

अनाथा प्रदेश के नागरिको ! तुम को मेरा अन्तिम नमस्कार ।

यह दिन पूरा हुआ ।

यह दिन हमारे लिए वैसे ही बंद हो रहा है जैसे कि जल-कुमुदिनी स्वयं को अपने आगामी कल के लिए बंद करती है ।

हमें यहाँ जो कुछ दिया गया, हम उसे संभाल कर रखेंगे,

तथा यदि यह पर्याप्त न हुआ तो हम पुनः साथ आयेंगे तथा दाता के सामने अपने हाथ फैलायेंगे ।

यह मत भूलना कि मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा ।

थोड़ी देर बाद, मेरी कामना फिर एक नए शरीर के लिए धूल तथा झाग एकत्र करेगी ।

थोड़ी देर और, पवन के स्कन्ध पर कुछ क्षण विश्राम कर के, फिर दूसरी एक महिला मुझे जन्म देगी ।

प्रणाम, तुम सब को तथा उस यौवन को जो मैंने तुम्हारे साथ व्यतीत किया है ।

यह कल ही की बात है कि हम सपने में मिले थे ।

मेरे एकांत में तुम ने मेरे लिए गीत गाए, तथा मैं ने तुम्हारी कामनाओं का आकाश में एक मीनार बनाया है ।

परंतु अब हमारी निद्रावस्था समाप्त हो चुकी है एवं स्वप्न पूरा हो गया है । और अब प्रभातका क्षण भी नहीं रहा ।

मध्याह्न आ चला है तथा हमारी अर्द्ध-जागरूकता पूर्ण दिवस में परणित हो चुकी है, अब हमें बिछड़ना ही पड़ेगा।

यदि यादों की गोधूली में हमारी मुलाकात कहीं एक बार फिर हो जाए, तो हम आपस मैं फिर बातें करेंगे तथा तुम अधिक गहरायियों से निकलने वाले गीत मुझे सुनावोगे।

और हमारे हाथ अगर किसी और सपने में मिलेंगे तो हम आकाश में एक और मीनार का निर्माण करेंगे।

यह कहते हुए उसने जहाज़ियों को इशारा किया, तथा उन्होंने तुरंत लंगर उठाया, फिर जहाज़ की ड़ोरियों को खोला तथा वह पूरब की ओर चल पड़े।

लोगों द्वारा मानों एक ही हृदय से निकली हुई आवाज़ आई; वह आवाज़ संध्या की गोधूली में उच्च हुई तथा एक शक्तिशाली तुरही के समान समुद्र में गूँज उठी।

केवल अल्मित्रा चुप थीं, उसकी नज़रें जहाज़ पर तब तक जमी रहीं जब तक वह धुँधलके में गायब हो गया।

जब सभी लोग प्रस्थान हुए वह तब भी समुद्र की दीवार पर अकेले खड़े होकर अपने मन में इस वचन का स्मरण करती रही :

“थोड़ी देर और, पवन के स्कन्ध पर कुछ क्षण विश्राम कर के, फिर एक दूसरी महिला मुझे जन्म देगी।”

जून 1989 में कश्मीर से पलायन के पश्चात्, 1991 ई से काठमाण्डौ, नेपाल में आवासित ज़ेहन-निशीन 1979 ई से क्रांतिकारी संघर्ष, मानव-शास्त्र, समाज-शास्त्र, साहित्य, विज्ञान, इतिहास तथा दर्शन-शास्त्र में रुचि से व्यस्त रहे हैं । कई वर्ष एक अध्यापक की हैसियत से कार्य करने के पश्चात् 2006 ई से वह एवरयंग ग्लोबल इन्टेलेक्चुवल फाउन्डेशन, काठमाण्डौ, नेपाल में टीम लीडर एवं संपादक की हैसियत से कार्यरत हैं । "Kashmir and Kilkenny Cats", "Liberating the Future from the Past", "Tenzin Tseten, the Trail and the Trait of the Time", "The Most Perfect Man", "I'm MiniKashmir", "Fourteen Days that Mattered Not in the World", "Contradictions in Special Relativity Theory"... के लेखक हैं ।

ISBN: 978-9937-9115-5-9
Typesetter; DTP and Publisher:
Everyoung Global Intellectual Foundation
Contribution: NRs: 1000/= or USD 10.00